ECL

ज्योत्स्ना

ईसीएल की राजभाषा पत्रिका

अंक–23, वर्ष 2025-26

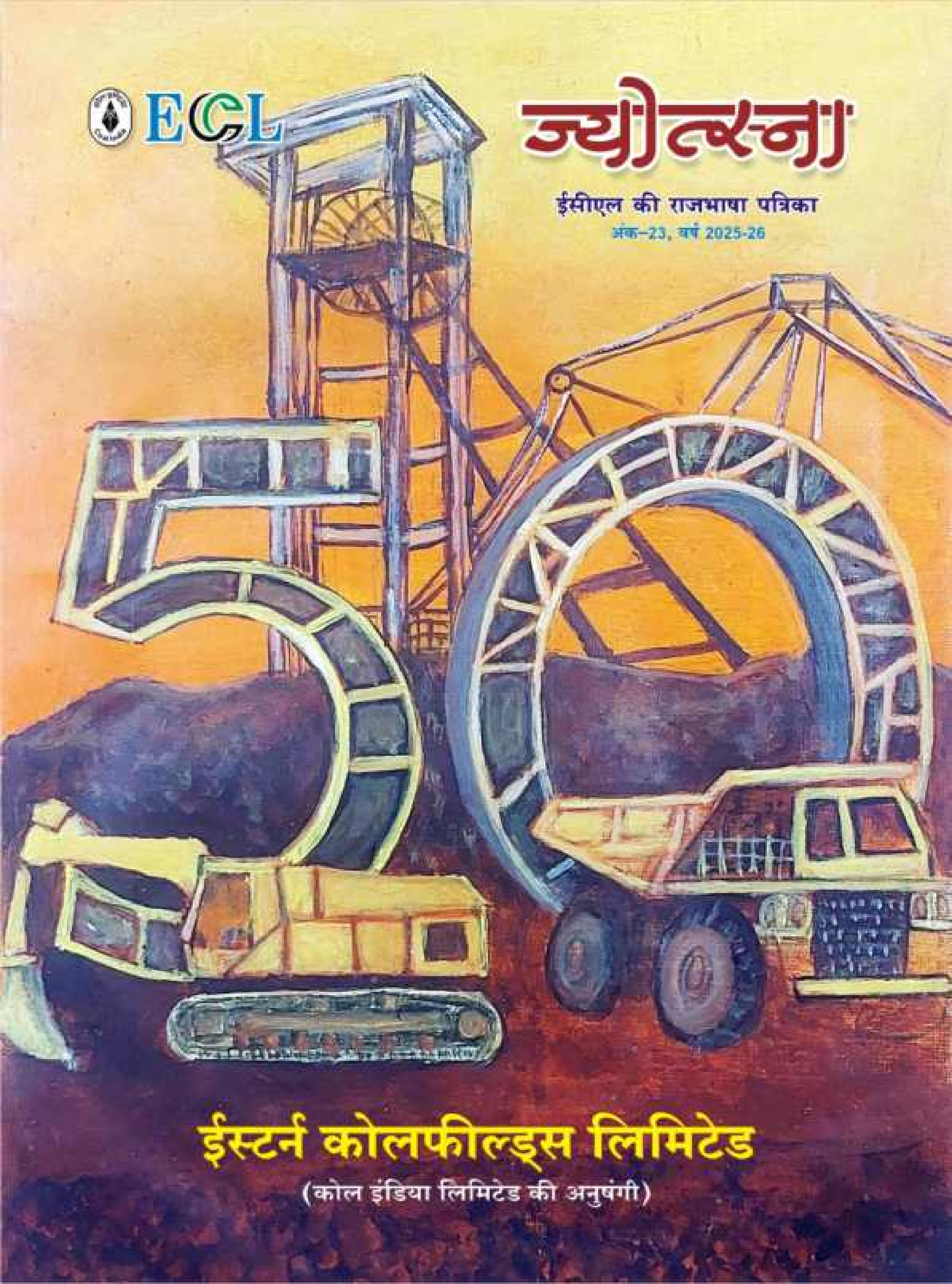

ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

(कोल इंडिया लिमिटेड की अनुषंगी)

अंक – 23
(वर्ष 2025-26)

मुख्य संरक्षक :
- श्री सतीश झा
  अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

संरक्षक:
- मो. अंजार आलम
  निदेशक (वित्त)
- श्री नीलाद्रि रॉय
  निदेशक (तकनीकी) संचालन
- श्री गुंजन कुमार सिन्हा
  निदेशक (मानव संसाधन)
- श्री गिरीश गोपीनाथन नायर
  निदेशक (तकनीकी) योजना एवं परियोजना
- श्रीमती दीप्ति पटेल
  मुख्य सतर्कता अधिकारी

संपादक :
- सुमेधा भारती
  राजभाषा विभाग

संपादकीय सहयोग :
- रूपा मित्रा
  राजभाषा विभाग

आवरण :
- रघुनाथ माजी
  गुणवत्ता नियंत्रण विभाग, ईसीएल

अस्वीकारोक्ति

'ज्योत्स्ना' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक मंडल, राजभाषा विभाग अथवा ईसीएल का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। 'ज्योत्स्ना' में प्रकाशित आलेखों में प्रयुक्त मानचित्र, प्रतीक, छवि आदि आधिकारिक नहीं है, बल्कि सांकेतिक है।

संपर्क सूत्र

राजभाषा विभाग, ईसीएल मुख्यालय, सांकतोड़िया,
पोस्ट : दिसेरगढ़, जिला : पश्चिम बर्धमान,
राज्य : पश्चिम बंगाल, पिन : 713333
ई-मेल : hodrajbhasa.ecl@coalindia.in

ECL

ज्योत्स्ना

अनुक्रमणिका

लेख का शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ सं०
शीर्षस्थ मण्डलों का लेख, संपादकीय		1-14
लेख :		
एकाग्रता	रंजना कुमारी	15
दृष्टिकोण	राघव प्रसाद पाण्डेय	17
मुफ्त नाश्ता	राजकुमार आर्य	19
शब्दों की शक्ति	जसविंदर सिंह घुमन	21
कविता :		
कारवां जिंदगी का	रिंकु राय	16
वैधव्य का दंश	रिंकी सिंह	20
कुछ यूं ढूंढता हूं	अनिल पटेल	22
कर्म दीप	अंकित	23
ऐ सुबह	अरविन्द कुमार मिश्रा	24
हम हैं रात का सूरज	आनंद कुमार रवानी	25
मेरी अभिव्यक्ति	किशुनदेव राम चन्द्रवंशी	26
हम बड़े हो गए हैं	कृति गुप्ता	27
कोल श्रमिक	केतन दीक्षित	28
खुद का दर्पण	सुब्रत साव	29
नया सवेरा नयी उम्मीद	सुचिका तिवारी	30
दोस्ती	प्रदीप कुमार	41
स्त्री शक्ति :		
नारी - देश का उज्जवल भविष्य	रूपा मित्रा	31
शब्द संस्कार :		
शब्द संस्कार	मिथुन साव	33
गतिविधियाँ :		
राजभाषा (हिंदी) माह का शुभारंभ		34
शताब्दी महिला मंडल और राजभाषा		35
संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण		36
सीएमडी ईसीएल : हिंदी गर्व व सम्मान की भाषा		38
बाल मन में सीखने की भावना का बीजारोपण		39
अभिव्यक्तियाँ	सत्यजीत बनर्जी	41

ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित
(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

नीतिगत लेख

ECL

भविष्य की उड़ान में पंखों का निर्माण : कास्ता वेस्ट कोल ब्लॉक

नित्य बदलती इस दुनिया में ऊर्जा के उपभोग और उसकी आपूर्ति में समूल बदलाव आया है। वहीं, पूरी मानव जाति नित्य नूतन नवाचारों, आविष्कारों व खोजों के माध्यम से कई निश्चित फल प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है। कहीं सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, आदि नवीनकरणीय संसाधनों पर गहन अन्वेषण हो रहे हैं तो कहीं स्थापित तंत्र को विकसित व रूपांतरित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में, ईसीएल अपने पारंपरिक खनन तकनीक से इतर भूमिगत कोयला गैसीकरण प्रौद्योगिकी (यूसीजी) पर कार्य कर रही है। यह कंपनी का भविष्य है। राष्ट्र को नित्य संवर्धित ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति का नया रूप है। यह स्वच्छ ऊर्जा का प्रतीक है जो मानव जाति के अनुकूल है। आइए, इस तकनीक के बारे में समझते है, यह क्या है, इसके लाभ क्या है, इसमें क्या-क्या चुनौतियाँ आने वाली है और उसका समाधान क्या होगा।

भूमिगत कोयला गैसीकरण, जिसे स्व-स्थाने (इन-सीटू) गैसीकरण के रूप में भी जाना जाता है, एक उन्नत तकनीक है जिसमें गैसीकरण प्रक्रिया सीधे कोयला सीम के भीतर गहरे भूमिगत होती है। यहाँ कोयले का खनन करने और उसे सतह पर लाने के बजाय, कुओं को कोयला सीम तक ड्रिल किया जाता है। कोयले को प्रज्वलित करने और गैसीकृत करने के लिए ऑक्सीजन और भाप की एक नियंत्रित मात्रा को प्रेषित किया जाता है जो कोयला सीमों को संश्लिष्ट गैस (synthetic gas) या सिनगैस में बदल देती है और फिर उसे दूसरे कुएं के माध्यम से बाहर निकाला जाता है। परिवर्तित सिनगैस मुख्य रूप से कार्बन मोनोऑक्साइड (CO), हाइड्रोजन (H_2), कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4), और जल वाष्प (H_2O) से बनी होती है।

इसका अनुप्रयोग गैस टर्बाइन या संयुक्त चक्रीय संयंत्रों में बिजली उत्पादन ; रासायनिक फीडस्टॉक्स यथा मेथनॉल, अमोनिया, सिंथेटिक प्राकृतिक गैस (SNG) आदि का उत्पादन तथा हाइड्रोजन के उत्पादन में होता है।

यह तकनीक राष्ट्रहित में है इससे 300 मीटर से अधिक गहराई वाले ऐसे कोयले भंडार जो खनन योग्य नहीं है तक पहुँच प्रदान करता है। पारंपरिक खनन की तुलना में सतह की गड़बड़ियों को कम करता है। कोयला परिवहन और हैंडलिंग की आवश्यकता को समाप्त करके कार्बन फुटप्रिंट को कम करता है। साथ ही, ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाता है और कच्चे तेल व पेट्रोकेमिकल आयात पर भारत की निर्भरता को कम करता है।

प्रेरणा व मार्गदर्शन

भूमिगत कोयला गैसीकरण प्रौद्योगिकी (यूसीजी) औद्योगिक उपयोग और ईंधन कोशिकाओं के लिए हाइड्रोजन का एक

वैकल्पिक स्रोत है। यूसीजी में भारत की तकनीकी क्षमता स्थापित करने की आवश्यकता काफी समय से महसूस की जा रही थी क्योंकि वर्तमान में यह क्षेत्र विश्व स्तर पर कुछ देशों के प्रभुत्व में है। इन्हीं संभावना को देखते हुए वर्ष 2023 के जनवरी माह में आरंभ हुए भारत सरकार की राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन का शुभारंभ किया गया जिसका उद्देश्य भारत को हरित हाइड्रोजन के उत्पादन, उपयोग और निर्यात के लिए एक वैश्विक केंद्र बनाना है। 2030 तक, यह 5 एमएमटी वार्षिक उत्पादन, 125 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता वृद्धि और कुल निवेश में 8 लाख करोड़ रुपये से अधिक का लक्ष्य रखता है, जिससे लगभग 6 लाख नौकरियां पैदा होंगी और जीवाश्म ईंधन आयात कम होगा।

इस मिशन के प्रमुख घटकों में सम्मिलित है यथा इलेक्ट्रोलाइजर के घरेलू विनिर्माण और हरित हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए प्रोत्साहन देना ; शिपिंग, विमानन और इस्पात जैसे उभरते अंतिम उपयोग वाले क्षेत्रों के लिए समर्थन हेतु पायलट परियोजनाएं ; बड़े पैमाने पर उत्पादन/उपयोग का समर्थन करने में सक्षम क्षेत्रों की पहचान और विकास करना ; ग्रीन हाइड्रोजन हब का निर्माण तथा दक्षता और लागत-प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए अनुसंधान और विकास के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी को सुनिश्चित करना।

संकल्प से क्रियान्वयन

कोयला मंत्रालय द्वारा भारत सरकार की प्रेरणा से राष्ट्रीय कोयला गैसीकरण मिशन का शुभारंभ किया गया है और वर्ष 2030 तक 100 मि. टन कोयला गैसीकरण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके लिए झारखण्ड राज्य के जामताड़ा जिले के नाला प्रखण्ड में स्थित कस्ता वेस्ट कोल ब्लॉक को भारत की भूवैज्ञानिक विन्यास में अपनी तरह की पहली पायलट यूसीजी परियोजना के लिए क्रियान्वयन स्थल के रूप में चुना गया है। साथ ही, इस महती कार्य की परिणति के लिए ईसीएल को समुचित दायित्व प्रदान किया गया है। ब्लॉक बुनियादी ढांचे से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है और अजय नदी के उत्तरी तट के समीप है।

इस पायलट परियोजना का उद्देश्य भारतीय भू-खनन स्थितियों में यूसीजी के लिए यथा अवधारणा का प्रमाण स्थापित करना; सिनगैस उत्पादन की गुणवत्ता, मात्रा और व्यवहार्यता, सुरक्षा, पर्यावरणीय प्रभाव का अध्ययन करना तथा बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक यूसीजी के लिए स्वदेशी तकनीक विकसित करना है। परियोजना का भूवैज्ञानिक और हाइड्रोजियोलॉजिकल विवरण इस प्रकार है :

- नियोजित सीम : बराकर शैलसमूह का बी-VI सीम
- गहराई : जमीनी स्तर से 250 से 305 मीटर नीचे
- कोयला गुणवत्ता : अकोककारी (Non-Coking), G7-G14 ग्रेड कोयला (गैसीकरण के लिए उपयुक्त)
- अधिभार : RQD 70-90% के साथ कठोर और कॉम्पैक्ट सैंडस्टोन, संरचनात्मक स्थिरता सुनिश्चित करते हैं।

- हाइड्रोजियोलॉजी : कोई प्रमुख जलभृत (aquifers) नहीं मिला।
  भूजल मॉडलिंग कोई महत्वपूर्ण पर्यावरणीय जोखिम नहीं इंगित करती है।
- अवतलन / धसान : शैल यांत्रिकी (Rock mechanics) अध्ययन नगण्य सतह अवतलन की पुष्टि करता है।

ईसीएल तकनीकी नवाचार को प्रोत्साहित और उसे सतत विकसित करने में विश्वास रखती है जिसके तहत कंपनी ने भारत का पहला भूमिगत कोयला गैसीकरण पायलट परियोजना (Underground Coal Gasification Pilot Project) नामशः कास्ता वेस्ट कोल ब्लॉक में प्रथम चरण की गतिविधियों को सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। यह एक ऐतिहासिक परियोजना है जिसे कनाडा की Ergo Exergy Technologies Inc. (EETI) और सीएमपीडीआई, राँची के सहयोग से संपन्न किया गया। परियोजना के उत्साहजनक परिणामों के बाद द्वितीय चरण का कार्य द्रुत गति से आगे बढ़ रही है जो निर्धारित समयसीमा के अंदर पूर्ण हो जाएगी।

कस्ता वेस्ट यूसीजी पायलट प्रोजेक्ट भारतीय ऊर्जा क्षेत्र के लिए एक ऐतिहासिक पहल है, जो अभिनव, स्वच्छ कोयला प्रौद्योगिकियों की ओर एक बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। सफल कार्यान्वयन भारत को विशाल अप्रयुक्त कोयला भंडार को स्थायी रूप से अनलॉक करने और कोयले से वैकल्पिक ऊर्जा उत्पादन में नेतृत्व करने की स्थिति में लाएगा। यह परियोजना भविष्य के वाणिज्यिक पैमाने पर यूसीजी संचालन की नींव के रूप में काम करेगी, जो ऊर्जा सुरक्षा, औद्योगिक फीडस्टॉक आत्मनिर्भरता और कम कार्बन विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

अंत में यही कहना चाहूँगा :

ऊर्जापूर्ण जगत् सर्वं प्राणिनं संजीवनं च

संपूर्ण जगत ऊर्जा से भरा हुआ है और वह सभी जीवों का पोषण करती है।

सतीश झा
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

समसामयिक लेख

ECL

हक तो यूं है कि हक अदा न हुआ

भारत विविधताओं से भरा और अपनी विविधताओं पर गर्व करने वाला देश है। यह विविधताएँ जितनी भौगोलिक और सांस्कृतिक है उतनी ही भाषायी भी है। भाषायी विविधता का आलम यह है कि भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार 121 प्रमुख भाषाएँ और 270 से अधिक मातृभाषाएँ बोली जाती है। जबकि भारतीय संविधान की आठवी अनुसूची में 22 प्रमुख भाषाएँ दर्ज है। इनमें से अधिकांश भाषाओ में समृद्ध साहित्यिक व सांस्कृतिक लेखन उपलब्ध है। जोकि इनके गौरवशाली इतिहास का प्रमाण है। इतनी समृद्ध भाषाएँ और उनके समृद्ध ऐतिहासिकता के बीच से ही किसी एक भाषा का राष्ट्रभाषा व राजभाषा के रूप में चुनाव राष्ट्रनिर्माताओ के समक्ष एक चुनौती थी। चूँकि हिन्दी राष्ट्रीय आंदोलन में अभिव्यक्ति व संपर्क की सशक्त माध्यम बनकर राष्ट्रभाषा व राजभाषा के रूप प्रतिष्ठा हेतु एक मजबूत दावेदार के रूप में उपस्थित थी। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही हिन्दी का एक राष्ट्रीय रूप विकसित हुआ और उस संघर्षकाल में ही हिन्दी ने उस गौरव को हासिल कर लिया जो किसी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाती है।

आज जिस हिन्दी पर इतनी बातें होती है उस हिन्दी का राजभाषा तक का सफर इतना आसान नहीं रहा। जो भी सुधिजन साहित्य एवं भाषा के इतिहास से थोड़ा बहुत भी वाकिफ है वो भलीभाँति जानते है कि हिन्दी का अब तक का सफर चुनौतियों और संघर्षों का ही सफरनामा रहा है। हिन्दी और फारसी का विवाद और फिर हिन्दी का नई चाल में ढलना और फिर उसके बाद और कमोवेश अभी तक हिन्दी अंग्रेजी का विवाद। आश्चर्य तो तब होता है कि जब हिन्दी को देश की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के समक्ष भी अलग-थलग करने की कोशिशे होती है। मैं इस बात का मजबूत हिमायती हूँ कि हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग से अन्य भाषाओं के कमजोर या कमतर होने का कोई संबंध नहीं बनता। बल्कि अन्य सभी प्रादेशिक भाषाएँ हिन्दी के साथ ही सहधर्मिणी बनकर अपना ऐतिहासिक योगदान करती आयी है और करती रहेगी।

आजादी के बाद से ही सरकारी प्रयोजनों में राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग संबंधी उपबंध अनुच्छेद 343 से 351 में किए गए है। और यह प्रयास किया गया है कि आजाद भारत में सरकारी कामकाज में हिन्दी को स्वीकार कर लिया जाएगा और सभी कार्यालय अपना दैनिक कार्य स्वेच्छा से हिन्दी में करने लगेंगे। लेकिन आँकड़े विस्मयकारी है और आजादी के इतने सालों बाद भी हिन्दी का प्रयोग सरकारी प्रयासों और आदेशों का मुखापेक्षी है। ऐसा भी नहीं है कि इन वर्षों में हिन्दी के विकास संबंधी कार्य और प्रयास बिलकुल भी हुए ही नहीं लेकिन जिस गति और उत्साह के साथ होना था उसकी अभी भी जरूरत बनी हुई है। कभी हिन्दी गद्य के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिशचंद्र ने अपनी भाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा था कि :-

"निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति के मूल
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय के शूल।।"

हमें भी अपने जीवन और दफ्तरी कामकाज में इसी आदर्श वाक्य के साथ चलना होगा तब कहीं जाकर हम हिन्दी को वह गौरव व स्थान दिलाने में सहायक हो सकते है जो कि लक्षित है। कई बार या कहें अक्सर यह अनुभव होता है कि हिन्दी में कामकाज करना उतना कठिन नहीं है जितना की इस संबंध में पूर्वाग्रह है। हममें से अधिकांश चली आती हुई परंपरा में ही कार्य करने के अभ्यस्त से हो गए उसमें थोड़ी सी भी नवीनता हमें विचलित कर देती है। लेकिन दुनिया की खूबसूरती तो उनसे हैं जिन्होंने प्रयोग किए और कुछ नया रचा। पिछले ही दिनों संसदीय राजभाषा समिति द्वारा पूर्वी क्षेत्र का निरीक्षण सम्पन्न हुआ और सभी निरीक्षित कार्यालयों में ईसीएल का प्रदर्शन तुलात्मक रूप से बेहतर था। ईसीएल द्वारा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग को लेकर सतत प्रयास उपर्युक्त उपलब्धियों की कहानी बयां करती है। हम थोड़े और प्रयास तथा उस दिशा में गंभीर पहल से इसमें गुणात्मक परिवर्तन ला सकते हैं और बाकियों के लिए उदाहरण बन सकते है। वार्षिक प्रतिवेदन, पत्रिकाएँ और विज्ञापन ने भी इस लक्ष्य की दिशा में सार्थक प्रयास किए है और हिन्दी की पहुँच अधिकाधिक लोगों तक सुनिश्चित हुई है। सेमिनार और कार्यशालाओं के नियमित आयोजन से एक बड़ा प्रशिक्षित कार्यबल तैयार हुआ जिसके परिणाम आने वाले दिनों में परिलक्षित होंगे। युवा कर्मियों का हिन्दी से संबन्धित कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी शुभ संकेत और उत्साहजनक है।

इन उपलब्धियों के साथ ही चुनौतियाँ भी कम नहीं है। इन चुनौतियों के साथ ही बेहतर समायोजन भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगी। कार्यालयों में लंबे समय तक अंग्रेजी का वर्चस्व रहा है और इस कारण तकनीकी और सॉफ्टवेर टूल्स उसके ज्यादा अनुकूल है जिस कारण हिन्दी में कार्य कठिन हो जाता है इसके साथ ही अंग्रेजी की प्रभावशीलता और व्यवसायिकता के प्रति अतिशय मोह भी एक अवरोधक है। अंग्रेजी में तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दों का प्रवाह सरल और सुगम है जबकि हिन्दी में इनके मानकीकृत रूपों का अभाव है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस कदम उठाएँ जा सकते है। नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, तकनीकी शब्दावली को सरल और व्यावहारिक बनाकर तथा द्विभाषी कार्य संस्कृति को बढ़ावा देकर इस दिशा में बेहतर परिणाम हासिल किया जा सकता है।

सार्वजनिक उपक्रमों में हिन्दी का प्रभावी प्रयोग महज एक भाषायी प्रश्न नहीं है इसके साथ ही सामाजिक समावेशन और सुशासन की बुनयादी धारणा के मिश्रित लक्ष्य से भी जुड़ा हुआ है। सतत प्रयास और व्यवहारिक नीतियों के द्वारा हम इस लक्ष्य को हासिल कर सकते है और भाषा के प्रति अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वाह भी कर सकते है। बकौल गालिब :-

"जान दी दी हुई उसी की थी
हक तो यूं है कि हक अदा न हुआ ।।"

मो. अंज़ार आलम
निदेशक (वित्त), ईसीएल

तकनीकी लेख

ECL

खान संवरण योजना
(Mine Closure Plan)

अंग्रेजी का एक शब्द है क्लोजर (Closure) जिसका सामान्य अर्थ बंद करना होता है लेकिन हम बंद करने से क्या समझते हैं तो समझ की ऐसी परिपाटी होती है कि यह देश, काल और पात्र के अनुसार बदलती रहती है। वित्तीय परिदृश्य में Financial Closure का अर्थ होता है वित्तीय पूर्णता। कोयला उद्योग में माइन क्लोजर का अर्थ भिन्न होता है यह केवल बंद करना नहीं होता है बल्कि लोक कल्याण के लिए चालू खान को संचालित करने के साथ-साथ उसे सतत संवराते हुए खनन गतिविधियों को समाप्त करना है ताकि खनन के बाद भी भूमि की लोक कल्याणकारी उपयोगिता सिद्ध होती रहें। अब संवरने से क्या समझते है तो स्त्रियों में एक गुण होता है सजना-संवरना। इस संयुक्त शब्द से हमें पूर्ण आशय का भान हो जाता है। हिंदी में संवरना प्रयोग में है लेकिन संस्कृत में संवरणा होता है।

परिचय

खान संवरण योजना (Mine Closure Plan) एक खनन योजना के वैधानिक घटक हैं जो खनन क्षेत्र के वैज्ञानिक रूप से संवरण, पर्यावरणीय पुनरूद्धार (पूर्वावस्था की प्राप्ति) और पुनर्वास के उपायों को निर्धारित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि भविष्य में उपयोग के लिए भूमि पुनःप्रतिष्ठित हो या इसकी पारिस्थितिक स्थिति में सुधार हो। वैज्ञानिक रूप से खान संवरण करना और खनन स्थलों का पुनर्वास, पर्यावरणीय क्षरण को कम करना, सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करना और भूमि को भविष्य में उपयोग के लिए उपयुक्त स्थिति में प्रतिष्ठित करके या इसे उसकी निकट-प्राकृतिक स्थिति में वापस करके सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए दिशानिर्देशों के अनुसार खान संवरण की गतिविधियाँ नियमित रूप से जारी रखना हैं।

खान संवरण योजना के प्रमुख घटक :

खान संवरण योजना में दो प्रमुख भाग होते हैं :

क. प्रगतिशील खान संवरण योजना (Progressive Mine Closure Plan) : खनन कार्यों की पूरी अवधि के दौरान विभिन्न भूमि उपयोग गतिविधियों को लगातार और क्रमिक रूप से किया जाता है। उदाहरणतः खान के पूरे खनन अवधि के दौरान में पुनर्भरण (Backfilling), पुनरूद्धार (reclamation), पुनर्रोपण (replanting) और पर्यावरण सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करना।

ख. अंतिम खान संवरण योजना (Final Mine Closure Plan) : गतिविधियाँ खान सक्रियता के अंत में शुरू होती हैं और भंडार समाप्त होने और/या खनन बंद होने के बाद भी जारी रह सकती हैं। उदाहरणतः परिचालन बंद करना (Dismantling), कौशल विकास (skilling), पर्यावरण निगरानी (environmental monitoring), आदि।

पृष्ठभूमि :

खान संवरण योजना तैयार करने के लिए प्रारंभिक अधिदेश मंत्रालय द्वारा सितंबर 2009 यथा संशोधित 29.05.2020 में

जारी किया गया था। ये दिशानिर्देश केवल भौतिक और पर्यावरणीय पहलुओं पर केंद्रित थे। वर्ष 2009 के दिशानिर्देशों से पहले परित्यक्त (abandoned) / अनिरंतर (discontinued) / बंद (closed) खानों या खदानों को बंद करने के समाधान के लिए खान संवरण दिशानिर्देश 2022 जारी किए गए थे। नए खान संवरण दिशानिर्देश 2025 को पुनरुद्धारित भूमि पर आजीविका के नए अवसर पैदा करने और सामुदायिक विकास के लिए उत्पादक पारिस्थितिकी तंत्र यथा कृषि, सौर ऊर्जा, पर्यावरणीय पर्यटन (eco-tourism) में परिवर्तन को अनिवार्य किया गया है।

उद्देश्य :

दिशानिर्देश इस बात पर जोर देते हैं कि संवरण योजना एक वैज्ञानिक, व्यवस्थित और सतत प्रक्रिया होनी चाहिए जो यह सुनिश्चित करती है :

- भूमि, जल, वायु और जैव विविधता का संरक्षण
- परिदृश्य की गड़बड़ी को कम करना
- स्थानीय समुदायों को स्वास्थ्य और सुरक्षा
- उपयोग करने योग्य स्थिति में भूमि की वापसी (जैसे कृषि, वानिकी, जलीय कृषि, मनोरंजक उपयोग)
- आश्रित आबादी के लिए सामाजिक और आर्थिक सहायक संरचनाएं

समग्र लक्ष्य खान मालिकों को संवरण दायित्वों के लिए जवाबदेह ठहराते हुए निकट-प्राकृतिक स्थिति या बेहतर भूमि मूल्यों का पुनःस्थापन (restoration) है।

खान संवरण का समय निर्धारण :

प्रगतिशील संवरण गतिविधियां शुरुआती चरणों से ही खनन कार्यों का हिस्सा हैं। खनन के बाद संवरण की अवधि को 3 (तीन) वर्ष के रूप में लिया जाना है और उसके बाद 2 (दो) वर्ष के लिए संवरण होने के बाद निगरानी अवधि होगी।

वित्तीय पहलू :

खान मालिकों को यह सुनिश्चित करने के लिए एक निलंब खाता (escrow account) (सावधि जमा) स्थापित करना चाहिए कि खान संवरण गतिविधियों के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध है, जिसमें खान की भूमि/परियोजना क्षेत्र पर कोई भी गतिविधि शुरू करने से पहले कोयला नियंत्रक संगठन अनन्य लाभार्थी के रूप में है।

संवरण की लागत का अनुमान क्षेत्र और खानों के प्रकार (भूमिगत या खुली खदान) के आधार पर लगाया जाता है और डब्ल्यूपीआई जैसे सूचकांकों के अनुसार समय-समय पर संशोधित किया जाता है। सभी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों सहित खनन कंपनी/मालिक अनुसूचित बैंक में वार्षिक राशि जमा करेंगे।

निलंब (एस्क्रो) राशि की प्रतिपूर्ति :

पिछले वर्ष में कुल जमा राशि का 50 प्रतिशत तक, निलंब खाते में अर्जित ब्याज को छोड़कर, हर वर्ष के बाद खान संवरण करने की दिशा में किए गए कार्य के आधार पर जारी किया जा सकता है। 31.01.2025 की नई दिशानिर्देशों के अनुसार जमा की

गई पांच वार्षिक निलंब राशि का न्यूनतम 25% सामुदायिक विकास और आजीविका से संबंधित गतिविधियों के लिए उपयोग किया जाएगा।

संवरण योजना की आवधिक जांच के अनुरूप, पिछले पांच वर्षों में प्रगतिशील संवरण अवधि के लिए ब्याज सहित शेष राशि का 50 प्रतिशत तक जारी किया जाएगा। शेष राशि सभी प्रावधानों के अनुपालन पर अंतिम खान संवरण होने के अंत में खान मालिक/पट्टाधारक को जारी की जाएगी।

संवरण होने के बाद निगरानी अवधि के अंत में शेष राशि का 90 प्रतिशत खान मालिक को खान मालिक/पट्टेदार द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित संवरण योजना के सभी प्रावधानों के अनुपालन पर जारी किया जाएगा, जिसमें कहा गया है कि खान को संवरण करने के क्रम में केंद्र या राज्य सरकार, वैधानिक संगठनों, न्यायालय आदि द्वारा प्रदत्त सभी वैधानिक नियमों, विनियमों, आदेशों का अनुपालन और कोयला नियंत्रक द्वारा विधिवत प्रमाणित किया गया है।

अंतिम खान संवरण करने की लागत से जमा की गई शेष राशि के 10 प्रतिशत से एक कोष न्यायोचित रूप परिवर्तन (Just Transformation) के लिए बनाया जाना है। इस राशि का उपयोग परियोजना प्रस्तावक द्वारा खान के संवरण होने के बाद कौशल विकास, निरंतर आजीविका और रोजगार सृजन आदि के लिए जिला प्रशासन, स्थानीय प्राधिकरण और हितधारकों के परामर्श से सामाजिक-परिवर्तन के लिए किया जा सकता है।

अंतिम संवरण प्रमाण-पत्र :

सीसीओ इस आशय का खान संवरण प्रमाण-पत्र जारी करेगा कि खान मालिक द्वारा किए गए अंतिम खान संवरण प्रावधानों/गतिविधियों को कवर करने वाली अनुमोदित खनन योजना के अनुसार सुरक्षात्मक, पुनरुद्धार, पुनर्वास कार्य और स्थिरता से संबंधित कार्य किए गए हैं।

ईसीएल में खान संवरण योजना की स्थिति :

कोयला मंत्रालय के दिशानिर्देश 2009 के अनुसार वर्ष 2013 में 88 खान संवरण योजना तैयार की गई थी। नए दिशानिर्देश 2020 जारी होने पर खान संवरण योजना को संशोधित किया गया था। कोयला मंत्रालय ने 31.01.2025 को "कोयला और लिग्नाइट ब्लॉकों के लिए खनन योजना और खान संवरण योजना 2025 तैयार करने के लिए दिशानिर्देश" जारी किए हैं। सभी चालू खानों को कवर करने वाली 63 पुनर्गठित खान संवरण योजनाओं को 31.01.2025 को कोयला मंत्रालय द्वारा जारी नए दिशानिर्देशों के अनुसार संशोधित किया गया है।

दो अंतिम खान संवरण योजना (FMCP) अर्थात् जमुरिया और सेंट्रल जमुरिया को संयुक्त रूप से जमुरिया समूह की खान के रूप में नामित किया गया है, जिसे 25-05-2024 को ईसीएल बोर्ड द्वारा तैयार और अनुमोदित किया गया है। इसके लिए खान संवरण की अंतिम गतिविधियाँ चल रही हैं।

नीलाद्रि रॉय
निदेशक (तकनीकी) संचालन, ईसीएल

नीतिगत लेख

भाषा और तकनीक

भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के "भाष" धातु से हुई है जिसका अर्थ होता है बोलना या कहना और इसी माध्यम से व्यक्ति अपनी बातों, विचारों व भावनाओं को सामने वाले के समक्ष प्रकट करते हैं। भारतीय भाषाविदों एवं विद्वानों ने भाषा चिंतन के क्षेत्र में बड़ा ही सूक्ष्म व गहन अध्ययन किया है। वैदिक काल में भाषा के लिये "वाक्" शब्द का प्रयोग किया जाता था। वाक् को नित्य और ब्रह्म माना गया है – वाग वै विराट, वाग वै सरस्वति, वाग वै मतिः, वाग वै धीः। इसी वाक् या ध्वनि के तीन स्तरों में द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथ्वी की कल्पना की गयी है। भारतीय भाषाविदों ने भाषा के चार रूप बताएं हैं :- परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी। भाषा के इन चार रूपों में प्रारम्भ के तीन अव्यक्त होते हैं जबकि एक वैखरी ही है जो श्रव्य है।

भाषा की प्रक्रिया में दो क्रियाएं मानी जाती हैं – उत्पादन तथा ग्रहण। कोई व्यक्ति अपनी बात को ध्वनि संकेतों के माध्यम से उत्पादित करते हैं तथा सामने वाला उन संकेतों को समझ कर अर्थ ग्रहण करते हैं, इस प्रक्रिया में संकेत चिह्नों का विशेष महत्व होता है। मौखिक भाषा में विभिन्न ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है और भाषा के लिखित रुप में उन्ही ध्वनियों को लिखित प्रतीकों में व्यक्त किया जाता है, यही प्रतीक वर्ण कहलाते हैं।

एक समाज के निर्माण में भाषा की अहम भूमिका होती है। समाज का निर्माण व्यक्तियों के आपसी समन्वय एवं सहयोग से होता है और समस्त व्यक्तियों को एक सूत्र में पिरो कर रखती है- "भाषा"। विचार अभिव्यक्त करने के कई तरीके हैं जैसे - लिखित, मौखिक एवं सांकेतिक। परन्तु व्यापक अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम बोल कर अर्थात मौखिक ही सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। भाषा का निर्माण किसी एक दिन की आकस्मिक घटना नहीं है वरन कई वर्षों के अथक मेहनत के बाद भाषा का निर्माण हुआ जिसमें शनैः-शनैः परिवर्तन और परिष्करण होता रहा, यही कारण है कि जो भाषा आज से हजार वर्ष पहले बोली जाती थी, वर्तमान समय में उस भाषा में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। भाषा के निर्माण में जलवायु के साथ-साथ भौगोलिक दशाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो मानव के स्वर तंत्रियों को प्रभावित करते हैं।

मानव के जीवन में भाषा का स्थान सर्वोपरि है और भाषा के अभाव में एक मानव समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भाषा मानव के साथ-साथ पूरे समाज को एक कड़ी में जोड़ने का प्रयास करती है। भाषा के माध्यम से न केवल विचारों की अभिव्यक्ति होती है बल्कि भाषा व्यक्ति के सभ्यता और संस्कृति का भी परिचायक होती है। वेश-भूषा के बाद भाषा ही व्यक्ति का परिचय प्रदान करती है।

भाषा और तकनीकी का सम्बन्ध अत्यंत घनिष्ठ है एवं दोनों एक दूसरे के परिपूरक हैं, तकनीकी उन्नति ने विश्व की समस्त भाषाओं को वैश्विक मंच प्रदान किया है। अनुवाद सॉफ्टवेयर, यूनिकोड, वॉइस असिसटेंट, ऑनलाइन पाठ्यक्रम आदि सोशल मीडिया के माध्यम से विभिन्न भाषाएँ एक दूसरे के निकट आई है। प्रोग्रामिंग भाषाएं, तकनीकी निर्देश और वैज्ञानिक शोध भाषा पर ही आधारित होते हैं। आज कंप्यूटर, इन्टरनेट, मोबाइल जैसे तकनीकों के कारण भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं रही बल्कि सूचना के भण्डारण, प्रसंस्करण और आदान-प्रदान का माध्यम बन गई है। प्रौद्योगिकी और इन्टरनेट के माध्यम से हमारा दैनिक जीवन सरल बन गया है। भारत में ई-गवर्नेंस की शुरुआत इसी तरह हुई जिसमें ई- का मतलब इलेक्ट्रॉनिक और ई-गवर्नेंस का अर्थ है सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके सरकारी सेवाओं का प्रबंधन व वितरण करना। यह केवल भाषाई बाधाओं को ही नहीं तोड़ता बल्कि यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी काम-काज का प्रसार दूर-दूर तक विकसित हो। इसका उपयोग सरकारी प्रक्रियाओं को सहज व सरल बनाना है जैसे- ई-मेल, वेबसाइट आदि। तकनीकी विज्ञान और तकनीकी प्रगति ने आज के दौर में भाषा को न तो एक क्षेत्र विशेष और न ही एक देश विशेष तक एक सीमा में आबद्ध करके रखा है। तकनीकी उन्नति ने हरेक व्यक्ति को हर भाषा तक पहुंच आसान बना दी है। जिनकी प्रथम भाषा हिंदी, बांगला, उड़िया, अंग्रेजी या कोई अन्य भाषा है उनके लिए गूगल इनपुट टूल ने भाषा की बाधा को दूर कर दिया है। डिजिटल इण्डिया जैसी पहलों के माध्यम से विभिन्न सेवाओं जैसे - आधार रजिस्ट्रेशन, डिजिटल लॉकर, ई-संजीवनी जैसी स्वास्थ्य सेवाओं से लोग लाभान्वित हुए।

इलेक्ट्रॉनिक मेल आदि के माध्यम से नागरिकों को नित्य काम-काज में आसानी हुई है तत्काल कोई सूचना प्राप्त करने में आसानी हुई है। जैसे कोई जानकारी प्राप्त करने के लिए अब लम्बी-लम्बी लाइन नहीं लगनी पड़ती और न ही कार्यालय के बार-बार चक्कर लगाने पड़ते है, बल्कि ऑनलाइन फॉर्म घर बैठे मोबाइल या कम्प्यूटर के माध्यम से भरते हैं और तत्काल जानकारी प्राप्त हो जाती है। इससे समय और संसाधन दोनों की बचत होती है.

भारत सरकार तकनीकी शिक्षा और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दे रही है। परिणामतः भारत का हर व्यक्ति इसका उपयोग कर रहा है, जिससे एक प्रभावी, उत्तरदायी और समावेशी शासन प्रणाली की स्थापना हो रही है।

गुंजन कुमार सिन्हा
निदेशक (मानव संसाधन)

नीतिगत लेख

जनभागीदारी से वृक्षारोपण : सामूहिक उत्तरदायित्व

क्या आपने कभी सोचा है कि पेड़ हमारे लिए कितना कुछ करते हैं? पेड़ों के बिना एक दुनिया की कल्पना कीजिए - तेज गर्मी, सुखी जमीन, बंजर खेत, कहीं कोई छाया नहीं और सुबह-सुबह पक्षियों की कोई चह-चाहट नहीं। पेड़ हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। यह "ग्रह के फेफड़ों" की तरह है जो अपने प्राकृतिक चक्र के तहत कार्बन-डाई-ऑक्साइड (CO_2) अवशोषित कर ऑक्सीजन छोड़ते हैं, अधिक से अधिक पेड़ लगाने से वातावरण में कार्बन-डाई-ऑक्सइड की मात्रा कम होती है जिससे हवा शुद्ध और वातावरण स्वच्छ होती है।

वन विविध प्रजातियों को आवास प्रदान करने का कार्य करती है, वनों के विनाश से जैव विविधता का ह्रास होता है और बड़े पैमाने पर विलुप्तियाँ भी होती हैं। पेड़ लम्बे समय तक प्रदूषण मुक्त वातावरण बनाए रखने का कार्य करते हैं। पेड़ जलवायु को नियंत्रित करने के साथ-साथ जल संरक्षण और मृदा संरक्षण में भी मदद करती हैं। अगर पूर्व काल की बात की जाए तो यह सत्य है कि पृथ्वी का अधिकांश भाग वनों से आच्छादित था। 2000 वर्ष पहले तक लगभग 80% पृथ्वी का भाग वन से आच्छादित था लेकिन वर्तमान में केवल 20-30% ही शेष रह गए हैं जो एक वैश्विक चिंता का विषय है।

हरित रणनीतियों की वृद्धि हेतु प्रत्येक वर्ष ईसीएल में समाज व लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरुक करने के लिए न केवल पर्यावरण दिवस बल्कि पूरे साल वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है जिसका परिणाम यह है कि पूरे ईसीएल क्षेत्र मे 3300 से अधिक प्रतिभागियो द्वारा 25,140 से ज्यादा वृक्ष रोपे गये। ड्रोन की मदद से सीड-बॉल प्लांटिंग सहित पौधारोपण की कई अभिनव गतिविधियाँ लक्षित की गईं।

ईसीएल अपनी पर्यावरण नीति के अंतर्गत "सस्टेनेबल डेवलपमेंट" को प्राथमिकता देती है। यह नीति कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) की पर्यावरण नीति के अनुरूप है जिसमें प्रदूषण नियंत्रण, जैव-विविधता, संरक्षण, कचरा प्रबंधन और जागरूकता शामिल है। विगत 5 वर्षों में (मार्च 2024) तक कुल 2,36.40 लाख पौधरोपण के माध्यम से लगभग 10,942 हेक्टेअर क्षेत्र को हरा-भरा किया गया है।

तकनीकी नवाचार के अंतर्गत सीड-बॉल प्लांटिंग और ड्रोन आधारित पौधारोपण (मियावाकी पद्धति) घने, स्थानीय जैव, विविधता के आधार पर फलदार और घरेलू पौधो को भी शामिल किया गया। ईसीएल के पर्यावरण संबंधी सीएसआर गतिविधियों के तहत प्रत्येक हेक्टेयर भू-भाग पर लगभग 2500 पौधे लगाए जा रहे हैं। वृक्षारोपण में आमतौर पर वानिकी भूमि पुनर्स्थापन या भूनिर्माण शामिल है। पेड़ लगाना जरूरी है जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित हो सके। पेड़-पौधे सिर्फ हरियाली ही नहीं देते वरन ये भविष्य की साँसें हैं। आज जो बीज हम बोते हैं, वही कल की छाँव बनते हैं।

आइए, पेड़ों से मित्रता करें और एक हरित स्वच्छ और सुरक्षित कल की ओर कदम बढ़ायें।

गिरीश गोपीनाथन नायर
निदेशक (तकनीकी) योजना व परियोजना

नीतिगत लेख

ECL

कर्तव्य और संवैधानिक दायित्व

एक सच्चा नागरिक वही होता है जो जीवन में कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी के पथ पर चल कर आसमान की बुलंदी को छूता है। आज जब देश तरक्की की ओर बढ़ रहा है तो हमारा यह कर्म बनता है कि हम सिर्फ अपने अधिकार ही न मांगे, बल्कि कर्तव्यों को भी निभायें। संविधान ने हमें अधिकारों के साथ-साथ मूल कर्तव्यों की भी प्रेरणा देती है। मौलिक कर्तव्य, वे नैतिक दायित्व है जो भारत के प्रत्येक नागरिक को संविधान द्वारा सौंपे गए है। ये कर्तव्य नागरिकों में देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता एवं भाइचारे की भावना को बढ़ावा देने, सकारात्मक नागरिकता को प्रोत्साहित करने और संविधान के मूल्यों को बनाए रखने के लिए निर्धारित किये गए हैं।

आरंभतः संविधान में ये मौलिक कर्तव्य शामिल नहीं थे। लेकिन राष्ट्र में लगे आंतरिक आपातकाल के दौरान इनकी आवश्यकता और अनिवार्यता महसूस की गई। वर्ष 1976 में भारत सरकार ने मौलिक कर्तव्यों के बारे में सिफारिशें करने के लिए सरदार स्वर्ण सिंह समिति का गठन किया। तदनुसार इस समिति ने संविधान में मौलिक कर्तव्यों पर एक अलग अध्याय को शामिल करने की सिफारिश की। इनमें 8 (आठ) मौलिक कर्तव्यों की सूची थी।

42वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1976

केंद्र सरकार ने सरदार स्वर्ण सिंह समिति की सिफारिशों को स्वीकार कर भारत के संविधान में मौलिक कर्तव्यों की सूची को शामिल करने का निर्णय लिया। इसके अनुसार 1976 में 42वें संविधान संशोधन अधिनियम को अधिनियमित किया गया जिसे लघु संविधान (Mini Constitution) भी कहा जाता है। जिसने संविधान में एक नया भाग (भाग IVA) जोड़ा। इस नए भाग में केवल एक अनुच्छेद (अनुच्छेद 51A) है जो भारत के नागरिकों के दस मौलिक कर्तव्यों की एक संहिता निर्दिष्ट करती है।

86वां संविधान संशोधन अधिनियम 2002

वर्ष 2002 के 86वें संविधान संशोधन अधिनियम ने एक और मौलिक कर्तव्य जोड़ा। तब से भारतीय संविधान में मौलिक कर्तव्यों की सूची निरंतर बनी हुई है।

वर्तमान में संविधान के भाग IVA के अनुच्छेद 51A में ग्यारह मौलिक कर्तव्य प्रदान करता है जो निम्नांकित है –

1. संविधान का पालन करना तथा उसके आदर्शों का सम्मान करना ;
2. स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय संघर्ष को प्रेरित करने वाले महान आदर्शों को सजोना ;

3. भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को बनाए रखना ;
4. देश के प्रति कर्तव्यनिष्ठा ;
5. धर्म, भाषा और क्षेत्रीय विविधताओं से परे समस्त नागरिकों के सदभावना तथा भाइचारे की भावना विकसित करना ;
6. देश की समृद्ध मिश्रित संस्कृति की विरासत को महत्व देना तथा उसका संरक्षण करना ;
7. वन, झील, नदियों तथा वन्यजीवों सहित प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करना ;
8. मानवतावाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, खोज तथा सुधार की भावना विकास करना ;
9. सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और हिंसा से दूर रहना ;
10. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना ;
11. छः से चौदह वर्ष की आयु के बीच के बच्चों को शिक्षा का अवसर प्रदान करना। (वर्ष 2002 में 86 वें संविधान संशोधन अधिनियम)

इसी प्रकार हम समस्त जनों को अपने देश एवं पर्यावरण के साथ-साथ हमारे निजी कंपनी के प्रति भी सौहार्दपूर्ण एवं उत्पादकपूर्ण संबंध बनाने में सहयोग करना है। कंपनी के साथ जो हमारे सूक्ष्म संबंधों के बीज निहित है उसको अपने आदर्शों, कर्तव्यों, जिम्मेदारियों में अंतर्निहित करना है। प्रत्येक कर्मचारियों को ईमानदारी, निष्ठा और कार्य कुशलता से काम करना चाहिए। अपने तत्कालिक बॉस की आज्ञा का सर्वदा पालन करना चाहिए। एक समय का अनुपालन करना चाहिए। भ्रष्टाचार, रिश्वत या अनुचित लाभ में संलिप्त नही होना चाहिए। एक दूसरे के सहयोग और मेहनत से हमें अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्टता का प्रदर्शन करते हुए अपने राष्ट्र की उन्नति के शिखर पर पहुँचाने के लिए उद्यत रहना चाहिए जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए वह एक प्रेरणा स्तंभ बन सके।

दीप्ति पटेल
मुख्य सतर्कता अधिकारी
ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

भाषागत साहित्य की विधाओं को मुख्य रूप से दो भागों यथा गद्य और पद्य (कविता) में विभाजित किया गया है। गद्य के अंतर्गत उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, यात्रावृत आदि आते हैं वहीं दूसरी ओर गीत, गजल, कविता, महाकाव्य, खंडकाव्य आदि पद्य के अंतर्गत आते हैं। साहित्य सृजन की शुरुआत सर्वप्रथम काव्य के रुप में ही हुई। पद्य लय और छंद से बंधी होती है जिसे अलंकार से अलंकृत कर और सुन्दर बनाया जाता है।

ज्योत्स्ना पत्रिका का 23 वाँ अंक आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है जिसमें साहित्य की दोनों विधाओं के दर्शन होते हैं। पत्रिका में ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के निदेशक मंडल के लेख हैं जो काफी ज्ञानवर्धक है। इस पत्रिका को नीतिगत लेख, समसामयिक लेख, कविताएँ, शब्द संस्कार, चित्रकला आदि कई खण्डों में विभक्त किया गया है जिसमें ईसीएल में कार्यरत कर्मी रचनाकारों की स्वछंद अभिव्यक्ति हुई है जो काफी सराहनीय है। अभिव्यक्तियाँ खंड में छोटे बच्चे की तुलिका से उकेरे गए चित्र प्रशंसनीय है।

ईसीएल राष्ट्र की ऊर्जा आपूर्ति में अपनी दमदार भूमिका सुनिश्चित करते हुए अपने कर्मियों के बहुमुखी विकास के प्रति भी सक्रिय रहती है और कर्मियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों का ख्याल रखती है। प्रबंधन द्वारा कर्मियों के रचनात्मक व सृजनात्मक गुणों को निखारने का कार्य किया जाता है। ईसीएल का राजभाषा विभाग कर्मियों के मानसिक विकास के लिए "ज्योत्स्ना" पत्रिका के माध्यम से एक मंच प्रदान करती है। एक ऐसा मंच जहाँ रचनात्मकता उद्‌भाषित होती है।

सुधि पाठकों के समक्ष पत्रिका का 23वां अंक प्रस्तुत है। आपके अनमोल सुझाव पत्रिका को और बेहतर बनाने में संपादक मंडल का पथ प्रदर्शक होंगे।

सुमेधा भारती
संपादक, "ज्योत्स्ना" पत्रिका
राजभाषा विभाग, ईसीएल

एकाग्रता

एक संतुलित और संतुष्ट जीवन के पीछे अनेक कारक होते हैं जो संयुक्त रूप से मानव को सही दिशा की ओर अग्रसर कर सफलता की ओर उन्मुख करते हैं। सफलता न तो एक दिन में प्राप्त होती है और न ही अचानक से मिलती है बल्कि उसके लिए दिन-रात कठिन मेहनत और संघर्ष करना पड़ता है। जो सफलता बिना मेहनत के प्राप्त होती है उसमें उस आनंद की प्राप्ति नहीं होती जो कठिन संघर्ष के पश्चात मिली सफलता से प्राप्त होती है। संयम, सहनशीलता, शांत मन, जिह्वा पर नियंत्रण, वाणी पर नियंत्रण, अनुशासन आदि जैसे कई कारक जो सफल जीवन के वाहक होते हैं, इन सबों में एक जो अति महत्वपूर्ण कारक है वह है "एकाग्रता" जिसके अभाव में लक्ष्य प्राप्ति की कल्पना कदापि नहीं की जा सकती। किसी एक लक्ष्य या कार्य पर मन केन्द्रित कर अगर प्रयास किया जाता है तो वह कार्य अवश्य सफल होता है। प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए उस कार्य में मन को एकाग्र कर उद्यम करना होता है।

मन की एकाग्रता किसी भी कार्य की सफलता की कुंजी होती है। इसी संदर्भ में एक महाभारत का एक छोटा सा प्रसंग है। गुरु द्रोणाचार्य के गुरुकुल में रहकर कौरव और पांडव शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। धनुर्विद्या सिखाने के क्रम में एक बार गुरु द्रोणाचार्य के मन में पांचों भाई पांडव के मन की एकाग्रता की जांच करने का विचार आया। उन्होंने एक पेड़ की शाखा पर मिट्टी की एक चिड़ियाँ रख दी और मिट्टी की उस चिड़िया के आँख को भेदने का लक्ष्य दिया। सर्वप्रथम द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर को बुलाया और चिड़िया की ओर दिखाते हुए पूछा "क्या देख रहे हो युधिष्ठिर?" युधिष्ठिर ने जबाब दिया - "गुरुदेव मुझे सम्पूर्ण पेड़, उनकी शाखाएँ, पत्तियाँ, चिड़ियाँ सब दिख रहा है।" इसके बाद भीम की बारी आयी तो उन्होनें भीम से भी यही प्रश्न पूछा तब भीम ने कहा - "मैं भी भैया युधिष्ठिर की तरह सब कुछ देख रहा हूँ बल्कि मैं तो रसोई घर में बने सारे पकवान को भी देख रहा हूँ जिसे मैं जी भर कर खाऊँगा।" फिर नकुल और सहदेव को बुलाकर भी उन्होनें यही प्रश्न दोहराया और उन दोनों भाइयों ने भी अपने अग्रज की भांति ही उत्तर दिया।

गुरु थोड़े निराश हुए और अंत में उन्होनें अर्जुन को बुलाकर प्यार से पूछा- "वत्स, तुम क्या देख रहे हो?" अर्जुन ने गुरुदेव का चरण स्पर्श कर कहा "गुरुदेव मैं सिर्फ अपना लक्ष्य देख रहा हूँ।"

गुरु द्रोण ने पूछा - "मतलब?" अर्जुन ने कहा - "मुझे चिड़ियाँ की आँख दिख रही है।" गुरु का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा और लक्ष्य भेदने का आदेश दिया और अर्जुन ने स्वयं को पूर्णतः लक्ष्य के प्रति समर्पित कर, एकाग्रचित होकर निशाना साधा और सही जगह पर बाण मारा। यही है मन की एकाग्रता का सुफल।

हमारे देश में ऋषि, मुनि, साधु, संत, महात्मा आदि अपना ध्यान केन्द्रित करने के लिए अर्थात मन को एकाग्र करने के लिए पहाड़ की कन्दराओं में तो कभी गुफाओं में जाकर ध्यान किया करते थे। यही एकाग्रता शनैः शनैः मोक्ष प्राप्ति की ओर ले जाती

थी। वर्तमान समय में भी लोगों को मन शांत करने के लिए योग, प्राणायाम और ध्यान करने की सलाह दी जाती है।

आज के व्यस्ततम जीवन में व्यक्ति कम से कम समय में बिना मेहनत के अधिक से अधिक सफल होना चाहता है। परंतु ऐसी सफलता क्षणिक होती है। हम जो भी कार्य करें उस कार्य के प्रति स्वयं को उत्सर्ग कर देना चाहिए। और जब एक बार सफलता का मंत्र मिल जाता है तब व्यक्ति पीछे लौट कर नहीं देखता बल्कि नित नूतन प्रगति पथ पर आरूढ़ हो आगे बढ़ता ही जाता है। इसी संदर्भ में रहीम ने कहा है -

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाए,
रहिमन मूलहि सींचिबो, फूलै फलै अघाय।

रंजना कुमारी
वेज बोर्ड अधिस्थापना विभाग,
ईसीएल मुख्यालय

कारवां जिंदगी का

कितना कठिन है
छोड़ना अपनों को
तोड़ना रिश्तों का बंधन
कुछ रिश्ते जो जुड़े जन्म से
कुछ कर्म से
कुछ बस यूं ही चलते-चलते बन गया कारवां
तब शायद आदमी हुआ करता है मामूली - साधारण
फिर छूटता जाता है धीरे-धीरे क्यों?
क्या इतना था आसान छोड़ना?
सहज स्वभाविक भावनाओं को
तो छूटा क्यों?

कुछ स्वार्थ में, कुछ दर्प में
किसी को खा गया परवान चढ़ा अभिमान
कभी मजबूरी तो कभी गफलतों का कीड़ा लग गया
कैसे सूखी होगी बगिया भावों की
मरी होगी संवेदना बारी बारी
लेकिन कसक रहेगी सब की
चाहें हो रुप अलग-अलग

रिंकु राय
मुगमा क्षेत्र, ईसीएल

| लेख

दृष्टिकोण

वाल्मीकि रामायण और तुलसी के रामचरितमानस का अद्भुत प्रसंग

प्रत्येक व्यक्ति अपनी शिक्षा, ज्ञान और अनुभव के अनुसार ही व्यवहार करता है तथा विचार प्रगट करता है। यही उसकी सीमा है और यही उसकी योग्यता का आधार भी।

राम रावण युद्ध समाप्त हो चुका था। लंका की शासन व्यवस्था, विभीषण के हाथों में आ चुकी थी। सीता को अब अशोक वाटिका में रखने का कोई औचित्य नहीं था। महाराज विभीषण जी का आदेश हुआ - उन्हें डोली में बिठा कर प्रभु श्री राम के शिविर में पहुँचा दिया जाए। आदेश का तत्काल पालन हुआ। सजी सजाई डोली में भगवती सीता को महाराज विभीषण के सेवक ले जाने लगे।

जब बंदरों ने देखा कि सजी हुई, खूबसूरत डोली में कोई जा रहा है, और जब उन्हें पता लगा कि माता सीता जी डोली में जा रही हैं जिनके लिए अभी तक हमलोग युद्ध लड़ रहे थे, तो वे सब लगे उचक उचक कर देखने। चारों ओर से डोली को घेर लिया। डोली आगे बढ़ नहीं पा रही थी। दूर से जब राम ने देखा कि कुछ गड़बड़ है, तब पता लगाया और स्थिति जान कर आदेश दिया कि सीता जी पैदल चल कर आएँ। बन्दर, भालू, रीछ आदि उनके पुत्र के समान हैं। उन्हें अपनी माता सीता के दर्शन करने का अधिकार है। यह जानने का भी कि आखिर वे अबतक किसके लिए युद्ध कर रहे थे।

व्यवस्था बदल दी गई। लाल कालीन पर सुन्दर, सुकोमल, सुगंधित, बहुरंगी फूल बिछा दिए गए। दोनों तरफ बन्दर, भालू, रीछ कतार में खड़े कर दिए गए। भगवती सीता जी, धीरे धीरे पैदल चलकर आने लगीं। उनका सुंदर रूप देखकर दो पढ़े लिखे बन्दर आपस में बातें करने लगे।

''अहो सुरम्यं वदनारविन्दं,'' - यार, देखो देखो, ये महिला कितनी खूबसूरत है, इसका चेहरा खिले हुए कमल के समान सुंदर है।

''सुनाशिका बिम्ब फलाधरोष्ठं'' - इसकी नाक भी बड़ी सुंदर है और होठ तो ऐसे लाल हैं जैसे बिम्ब के फल हों।

''प्रफुल्ल पद्मायत लोचनायाः'' - दोनों आँखें ऐसी हैं जैसे खिले हुए कमल हों, लेकिन,

''पुच्छं बिना तुच्छमिदैव सर्वं'' - इनकी पूँछ नहीं है, इसलिए इनकी सारी सुंदरता बेकार है।

अब बताइए मित्रों, एक मामूली बन्दर ने ''अपरूप सुंदरी सीता'' की सुंदरता को बेकार सिद्ध कर दिया।

सीता जी -जिनके लिए तुलसीदास ने कहा है- ''सिय सोभा नहि जाइ बखानी'' - सीता की सुंदरता का वर्णन नहीं किया जा सकता। ''जगदंबिका रूप गुण खानी'' - जगदम्बा रूप और गुण की खान हैं।''उपमा सकल मोहि लघु लागी'' - सारी उपमायें मुझे छोटी लग रही हैं। ''प्राकृत नारि अंग अनुरागी'' - सभी नारियाँ प्रकृति से उत्पन्न हैं पर सीता तो अयोनिजा हैं। उनका जन्म माता के गर्भ से नहीं हुआ है, वे धरती से उत्पन्न हैं। ''सिय बरनिअ तेइ उपमा देई'' - उन्हीं उपमाओं से मैं सीता जी का वर्णन कैसे कर सकता हूँ और ''कुकवि कहाई अजसु को लेई'' - ऐसा करके खराब कवि कहलाने की बदनामी कौन लेना चाहेगा। ''जौं पटतरिअ तीय सम सीया, जग असि जुबति कहाँ कमनीया''- जो सीता के समान कमनीय हो ऐसी युवती संसार में भला कौन है। ''गिरा मुखर, तन अरध भवानी''- सरस्वती से उनकी उपमा नहीं दी जा सकती, क्योंकि सरस्वती बहुत बोलती हैं, भवानी का आधा शरीर ही अपना है, आधा तो शिव जी का है। ''रति अति दुखित, अतनु पति जानी'' - कामदेव का शरीर है ही नहीं, अतः उनकी पत्नी रति हमेशा दुखी रहती हैं। ''विष, वारूणी बंधु प्रिय जेही''- जहर और शराब, लक्ष्मी के साथ समुद्र से उत्पन्न होने के कारण उनके भाई हैं - ''कहिअ रमा सम, किमि वैदेही'' - जिन्हें ऐसे भाई हों, तब ऐसी लक्ष्मीजी भला सीता जी के समान कैसे हो सकती हैं। फिर सीता जी की तुलना किससे की जाए, इस समस्या का समाधान क्या है?

''जौं छवि सुधा, पयोनिधि होई, परम रूपमय, कच्छपु सोई। शोभा रजु, मंदः सिंगाः, मथै पानि निज पंकज माः - यदि अमृत तुल्य सुंदरता का समुद्र हो, अत्यंत रूपवान कोई कछुआ हो, शृंगार का पर्वत और शोभा की रस्सी लेकर कामदेव अपने हाथों से उस समुद्र का मंथन करे, तब जो लक्ष्मी उत्पन्न हो, वह भी मुझे कहते हुए संकोच हो रहा है कि शायद वह लक्ष्मी, सीता जी के बराबर हो जांय। इतनी सुंदरी सीता की सुंदरता का एक मामूली बन्दर द्वारा ऐसा मूल्यांकन? लेकिन इसमें उसका भी दोष नहीं, उसके अल्प ज्ञान, उसकी अल्प शिक्षा का ही दोष है। तुलसीदास ने कहा है - कपि के ममता पूँछ पर - बन्दर के लिए पूँछ ही सब कुछ है। वह तो इसके अतिरिक्त कुछ सोच ही नहीं सकता।

इसलिए किसी अशिक्षित, अल्प शिक्षित, या संस्कार विहीन व्यक्ति की निम्नस्तरीय टिप्पणियों पर ज्यादा सोच विचार करना ठीक नहीं, सुनकर, पढ़ कर भूल जाना ही श्रेयस्कर है।

राघव प्रसाद पाण्डेय
पूर्व राजभाषा अधिकारी
ईसीएल मुख्यालय

मुफ्त नास्ता
Complimentary Breakfast Free

अक्सर लोग जब कहीं बाहर घूमने जाते हैं तो होटल में ठहरते हैं। सामान्यतः बड़े होटल में सुबह का नाश्ता मुफ्त होता है, मुफ्त क्या वे लोग होटल के किराए में ही नाश्ते का पैसा भी जोड़ लेते हैं।

मैं भी एक बार शहर से बाहर कुछ काम से गया था तो ऐसे ही एक होटल में ठहरा। सुबह होने पर मेरे कमरे के दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी, दरवाजा खोला तो देखा वेटर खड़ा हुआ है, मुझे देखकर बोला सर नाश्ते का इंतजाम नीचे हाल में है। आप भी समय से नाश्ता कर लीजिएगा, नाश्ते का समय सुबह 10 बजे तक ही है।

मैं भी 09:15 पर नाश्ते के लिए हाल में पहुँच गया और एक टेबल पर जाकर बैठ गया, चारों तरफ नजर घुमाई तो देखा बहुत सारे लोग अपनी अपनी टेबल पर परिवार के साथ, बच्चों के साथ बैठे हुए है पर किसी ने अभी तक नाश्ता नहीं लिया, मैं भी बैठा रहा और अचंभे से सब देखता रहा, खैर देखते-देखते 09:30 बज गए। फिर एक बार वेटर ने आवाज लगाई कि सभी लोग नाश्ता कर लीजिये नाश्ते का समय सुबह 10 बजे तक है।

अचानक सभी लोग अपनी टेबल से उठे और नाश्ता लेने दौड़ पड़े। देखते ही देखते टेबल पर भीड़ हो गई। टेबल पर तरह-तरह का नाश्ता था - सैन्विच, मिल्क, केलॉग्स, ब्रेड, बटर, अलग-अलग तरह के जूस, चाय, कॉफी, अंडा और भी बहुत कुछ, सभी लोग अपनी-अपनी प्लेट भरने में लगे हुए थे। कोई सैन्विच से प्लेट भर रहा था कोई ऑमलेट भर रहा था तो कोई 3-4 जूस के गिलास उठा रहा था। ऐसा नहीं है कि वे अपनी क्षमता नहीं जानते कि नाश्ते में कितना खाया जा सकता है लेकिन फिर भी प्लेट में कोई कमी न रह जाए इसलिए बस उठाए जा रहे थे।

सामान्यतः लोगो की मानसिकता होती है कि नाश्ता तो मुफ्त का है ही तो थोड़ा देरी से किया जाए और ज्यादा से ज्यादा किया जाए ताकि लंच की आवश्यकता न रहे।

मैं टेबल पर बैठा-बैठा सब देख रहा था, लोग नाश्ता करते-करते थक गए थे जितना प्लेट में लिया था खाया नहीं जा रहा था, कुछ बच्चे अपनी माँ से और नहीं खाने की जिद कर रहे थे। माँ कह रही थी और खाओ फिर लंच नहीं मिलेगा, भला एक बच्चा कितना खाएगा। माँ भी बोल-बोल कर थक चुकी थी, खैर देखते ही देखते 10 बज गए और नाश्ते वाला हॉल बंद कर दिया गया। लोग अपनी टेबल पर बहुत सारा नाश्ता यूं ही छोडकर शर्म से सिर नीचे किए एक-एक करके हॉल से निकल गए।

सोचिए, ये दुनिया भी एक हॉल है जिसे एक दिन सबको छोडकर जाना है कोई इसमें हमेशा के लिए यहाँ नहीं रह सकता, सब जानते हैं कि उनकी जरूरत कितनी है पर फिर भी अपनी आवश्यकता से अधिक कमाने के चक्कर में लोग रात दिन भागते

रहते हैं वो ये भी जानते हैं कि जितना उन्होंने प्लेट मे लिया है उतने का उपभोग भी वे नहीं कर पाएंगे और ना ही साथ लेकर जा पाएंगे। जो है वो भी यहीं रह जाएगा। लेकिन फिर भी ना जाने क्यों लोग आवश्यकता से अधिक कमाने के चक्कर में रात-दिन भागते रहते हैं।

कबीर का एक दोहा है :- साईं इतना दीजिये, जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

कबीर दास जी कहते हैं कि हे प्रभु! मुझे केवल इतना ही धन या साधन दीजिए, जिसमें मेरा परिवार (कुटुंब) अच्छे से गुजर-बसर कर सके। मेरी इच्छा बस इतनी है कि मैं भी भूखा न रहूँ और मेरे द्वार से कोई साधु, संत या जरूरतमंद भी भूखा न लौटे।

राजकुमार आत्रे
सुरक्षा निरीक्षक,
सुरक्षा विभाग, ईसीएल मुख्यालय

वैधव्य का दंश

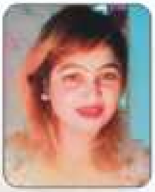

इस समाज ने दुबारा सजाया,
मगर इस दफे पूरा फीका सजाया।
रंग छीन कर बेरंग बनाया,
वस्त्र पर उसके सफेद रंग है चढ़ाया।
शोभा या शृंगार विहीन बनाया,
नाम दे विधवा का उसे खूब रुलाया।
बदल दिया अस्तित्व जीवन का,
खुशियों से न रहने दिया कोई वास्ता उसका।
हर खुशहाल पल से तिरस्कृत किया,
कदमों को मान मनहूस शुभ कार्यों से दूर किया।
क्यों समाज ने नारी के साथ ही ऐसा किया,
व्यथित जीवन जीने को बाध्य किया।

बदला रूप देखा नहीं कभी किसी पुरुष का,
न देखा कभी सफेद लिबास में लिपटा हुआ।
विधवा जीवन क्यों देखा एक नारी का ही,
क्यों पुरुष का कोई विधवा जीवन न बना।
यह समाज, ये नियम, ये दोहरे मानदंड,
क्या कभी समझ पाएंगे एक स्त्री का मन?

रिंकी सिंह
पीआरबी प्रकोष्ठ
ईसीएल मुख्यालय

| लेख

शब्दों की शक्ति

शब्द, शब्द एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों व भावों का आदान प्रदान करता है। शब्द की शक्ति से व्यक्ति को किसी भी भाव व रिश्ते का अहसास होता है। व्यक्ति द्वारा कहे गए प्रत्येक शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं जो अन्य व्यक्ति के विचारों को प्रभावित करते हैं। सही मायनों में शब्द हमारे विचारों की मुद्रा होते हैं। शब्दों के बिना न तो हम सोच सकते हैं, न ही अपना कोई कार्य कर सकते हैं। शब्दों की शक्ति अतुलनीय है, अच्छे व सकारात्मक शब्द व्यक्ति को सही दिशा व ज्ञान प्रदान करते हैं। कई बार सोच समझकर किए गए अच्छे शब्दों का प्रयोग व्यक्ति का जीवन बदल देता है। सही बात, सही समय पर केवल अच्छे शब्दों के माध्यम से की जा सकती है।

कई बार व्यक्ति अनुचित शब्दों का प्रयोग करके अपने चरित्र व रिश्ते पर प्रश्नचिन्ह लगा देता है। व्यक्ति को प्रतिदिन अपने अंदर अच्छे व सही शब्दों का प्रयोग करने की आदत डालनी चाहिए क्योंकि कई बार यदि व्यक्ति गलत शब्दों को बोलने से रोक ले तो अनर्थ होने से बच जाता है। सिर्फ सही बात को सही समय पर कहना ही कला नहीं है बल्कि सर्वाधिक होने के बावजूद गलत बात को बिना कहे रह जाना उससे भी बड़ी कला है। शब्दों की शक्ति अतुलनीय है। जिन व्यक्तियों का शब्द भंडार अथाह होता है वे अपने मधुर शब्दों के माध्यम से सहजता से बिगड़े कामों को भी संवार देते हैं। हृदय से बोले गए शब्द 'मुझसे गलती हो गई', 'धन्यवाद' भी कानों में मिश्री घोल देते हैं। ये छोटे से शब्द, बड़ी से बड़ी लड़ाई टालने का दम रखते हैं। शब्द केवल अक्षरों का मेल नहीं होते बल्कि ये विचारों, भावनाओं और ऊर्जा के वाहक होते हैं। सही शब्द किसी को प्रेरित कर सकते हैं, दिलासा दे सकते हैं, और जीवन बदल सकते हैं, जबकि गलत शब्द किसी को तोड़ सकते हैं, दुख पहुँचा सकते हैं, और रिश्तों को बिगाड़ सकते हैं।

शब्दों की सकारात्मक शक्ति

- **प्रेरणा** : एक सही समय पर बोले गए प्रेरणादायक शब्द किसी को असंभव को संभव बनाने की ताकत दे सकते हैं।
- **सांत्वना** : कठिन समय में बोले गए सहानुभूति भरे शब्द किसी व्यथा को कम कर सकते हैं।
- **प्रेम और सम्मान** : मधुर और सम्मानजनक शब्द रिश्तों को मजबूत बनाते हैं और लोगों को करीब लाने में मदद करते हैं।

शब्दों की नकारात्मक शक्ति

- **आहत करना** : कटु एवं कठोर शब्द किसी के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचा सकते हैं और गहरे घाव छोड़ सकते हैं।
- **भ्रम फैलाना** : गलत सूचना देने वाले शब्द या झूठे शब्द समाज में भ्रम और अशांति फैला सकते हैं।

- **रिश्तों को बिगाड़ना** : असंवेदनशील शब्द किसी भी रिश्ते को कमजोर कर सकते हैं और आपसी रिश्तों में दूरियां बढ़ा सकते हैं।

शब्दों का सही उपयोग

शब्दों की शक्ति को समझकर हमें उन्हें सोच-समझकर प्रयोग करना चाहिए। हमें ऐसे शब्दों का चयन करना चाहिए जो प्रेरित करें, जोड़ें और सकारात्मकता फैलाएँ।

जैसा कि कहा जाता है : ''शब्दों की ताकत तलवार से भी अधिक होती है।'' इसलिए, अपने शब्दों को सोच-समझकर चुनना चाहिए, क्योंकि वे किसी के जीवन को सँवार भी सकते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं।

जसविंदर सिंह घुमन
सेवानिवृत्ति कार्यालय अधीक्षक (राजभाषा)
ईसीएल मुख्यालय

कुछ यूं ढूढ़ता हूँ

आकर अपने शहर में दोस्तों को, कुछ यूं ढूंढ़ता हूँ,
जैसे कोई बंजारा एक आसरा, एक सुकून ढूंढ़ता हो।
पुराने दिन के शरारतों के वो कुछ पल ढूंढ़ता हूँ
जैसे कोई मधुमक्खी फूलों का रस ढूंढ़ती हो।
जिंदगी की भाग दौड़ में खुशी के दो पल ढूंढ़ता हूँ
जैसे कोई बच्चा मां के आंचल की छांव ढूंढ़ता हो।
जिंदगी कुछ यूं वीरान सी लगने लगी है।
इसीलिए गैरों में भी दोस्तों का प्यार ढूंढ़ता हूँ।

अनिल पटेल
उप प्रबंधक (आई. ई. डी.)
अध्यक्ष-सह-प्रबंध-निदेशक का सचिवालय
ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड

कर्म दीप

जब तम ने घेरा हो चारों ओर,
और राहें हों धुँधली - कठोर।
तब जलता है साहस का एक दीप,
जो न झुके-डरे, न ही भयभीत।
जो हर बाधा में चलता चलें,
कर्म की गाथा बनकर जलें।
जो नीति-निष्ठा से है चले
प्रयासों से पथ नया खुले।
माने जो गीता का ज्ञान,
हर लेख बने युग का विधान।

हों श्रमशील, संकल्प प्रखर,
चित्त में हों कुरुक्षेत्र समर।
ना स्वार्थ-मोह का घेरा हों,
बस कर्म पथी का पहरा हों।
न यश-अपयश की चाह रहें,
बस सेवा का सदा भाव रहें।
हर दिन में तप, समर्पण हो,
हर श्वास राष्ट्र को अर्पण हो।
ना नाम बचे, ना रूप रहे,
बस कर्म अमर, स्वरूप रहे।

अंकित
उप प्रबंधक (आई. ई. डी.)
अध्यक्ष-सह-प्रबंध-निदेशक का सचिवालय
ईस्टर्न कोलफिल्ड्स लिमिटेड

| कविता

ऐ सुबह ! क्यों आयी है तू ?
ठहरने दे कुछ पल और मुझे,
उसकी यादों की आगोश में।

अभी तो मैंने उसे आँखें भरकर देखा भी नहीं,
अभी तो उसे सीने से लगाना बाकी है।
बाकी है अभी उसके गर्म सांसो को महसूस करना,
अभी तो उसके होने का एहसास होना बाकी है।

अभी तो जेहन के अल्फाज जेहन में है,
अभी तो इज़हार-ए-इसरार बाकी है ।

इन्कार बाकी है अभी,
अभी तकरार बाकी है।
रोने दे बिलखने दे तड़पने दे मुझे,
बिखर जाने दे मुझे टूटकर।

मुस्कुरा लेने दे कुछ और पल मुझे,
मिटा लेने दे अपनी तन्हाई को।
धो लेने दे मेरे जख्मो को आँसूओं से मेरे,
भूल जाने दे मुझे मेरे वजूद को।

मुझे आरजू नहीं कोई तेरी झूठी उम्मीद की,
कि कभी आएगा सुकून मेरी भी जिन्दगी में।
रहने दे तन्हा बेचैन मुझे,
मेरी बेचैनी ही मेरा सुकून है।

गर आ सके कभी ऐ सुबह,
तो आना इस कदर,
कि मैं पलकें उठाऊँ और वह हो रू-ब-रू,
वरना छोड़ दे होने को फना मुझे,
उसकी यादों की आगोश में।

अरविन्द कुमार मिश्रा
उप प्रबंधक (सामुदायिक विकास)
केन्दा क्षेत्र, ई.सी.एल.

| कविता

हम हैं रात का सूरज

सुबह निकलती शाम को ढलती
अपना शौर्य बिखेरती किरणें सूरज की
उदय होती लालिमा के साथ
उज्ज्वल करती जीव-जगत को
चैत, बैशाख, ज्येष्ठ माह में रौद्र रुप दिखाती है
आषाढ़, सावन, भादो में बादलों को लांघ कर आती है
आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष में अनेक रुप में प्रकट होती
पौष, माघ और फागुन में अपनी स्वर्णिम छटा बिखेरती
संध्याकाल सूर्यास्त से जब छा जाता अंधेरा
तब जन-जन करते हैं विद्युत के सहारे सवेरा
कोयले की देन है ये जगमगाते गांव व शहर
जब विद्युत गृह से उठती है कोयले के ऊर्जा की लहर
भारत की भ्रमण कराती जो भारतीय ट्रेन
जिस शक्ति से चलती, वह है कोयले की देन
हम कोल कर्मी करते हैं कोयले का उत्पादन ज्यादा
जिससे देश में न हो बिजली की कोई बाधा
प्रकृति के साथ करते हैं कार्य, कोयले की खान में
सुरक्षित होकर वापस घर लौटना, यही रहता ध्यान में
पैरों में जूता माथे पे टोपी उस टोपी पे रहती बत्ती साथ में
कोयले की खान, जहाँ लगता है हम हैं खड़े सुनसान रात में
सुरक्षा के तीन तत्व लगाकर, डोली से जाते हैं पाताल में
कोयला उत्पादन में एक गलती, कोल कर्मी को पहुंचा देती है अस्पताल में
अपने वतन को विकासशील से विकसित देश बनाएंगे
करके उत्पादन कोयले का अथक प्रयास से लक्ष्य को हासिल करेंगे
कुछ शरारती तत्व कोयला चोरी को मान बैठे हैं अपना रोजगार
कठिन कानून की है जरुरत तभी कोयला चोरी रोक पाएगी सरकार
जब न थी एस डी एल माथे पर लेकर झुड़े भरती थी गाड़ी
तब जाके लोडरों को मिलती थी पगार सारी
हॉलेज के नॉलेज सूझ बूझ रखने वाले होते हैं चालक
खलिया को पहुंचाना बोझाई सुरक्षित लाना वही होती है ताकत
जो कोल कर्मी की हुई है शहादत उनको सदा नमन
कंपनी सदा प्रगतिशील रहे खुशहाल रहे चमन।

आनंद कुमार रवानी
सुरक्षा प्रहरी
सुरक्षा विभाग, ईसीएल मुख्यालय

मेरी अभिव्यक्ति

'रिटायर्ड' शब्द
सालता है मन को
खंगालता है तन को
क्या मैं अकर्मण्य हो गया हूँ?
कर्म क्षेत्र की जिजीविषा से
क्या मुक्ति पाकर धन्य हो गया हूँ?

यही तो नियम है, विधान है
अनवरत चालित देश का संविधान है
मन बोझिल है, पर उत्कण्ठित है
ये विदाई के गम, ये लम्हें यह प्यार
याद आएंगे हरदम, मेरा यह ईसीएल परिवार।

एहसास नये जीवन का
कुछ खोने का, कुछ पाने का
यह कोयला यह माटी, देश की यह थाती
ये टोपी और जूते, सुरक्षा के साथी

ये चानक और बाती, ये कोयले के ढ़ेर
धड़ धड़ की आवाजें, आती देर सवेर
खुली खदान परियोजनाएं, यह खनन भारती
कुशल कामगारों की टोली, प्रगति रथ के सारथी

देश का भविष्य इस पर, है खड़ा यह शान से
"लक्ष्य" तक पहुँचाना, मान से अभिमान से
यही है अभिलाषा मन की, ईसीएल फूले फले
नित्यप्रति उत्पादन और उत्पादकता के सोपान पर
आगे बढ़े आगे बढ़े

किशुनदेव राम चन्द्रवंशी
इलेक्ट्रिक सुपरवाइजर / फोरमैन इंचार्ज
परासिया कोलियरी, कुनुस्तोड़िया क्षेत्र, ईसीएल

हम बड़े हो गए हैं

जब से कमाने की होड़ में जुड़ी हूँ,
तब से मेरी गुल्लक में सपने घट रहें हैं।
जब से जिम्मेदारियाँ बढ़ी है मेरी,
तब से मस्ती का खजाना कम हो रहा है।
जब से आजादी का स्वाद चखा है मैनें,
तब से खुद की पहचान खुद में ही समा रही है।
जब से एक नई पहचान बनाई है मैनें
तब से पुराने रिश्तों की गरमाहट घट सी गई है।
जब से सही और गलत का फर्क समझा है मैनें,
तब से ना जाने मेरी मासुमियत कम-सी हो गयी है।
शायद जब से बड़े हो गए हैं हम,
तब से और अधूरे हो गए हैं हम।
रोते हुए अपनों से जिद करना,
और जिद पूरी होने की उम्मीद रखना।
वो मासुमियत सी मुस्कान दिखाना,
वो चाहत की बरसात कराना।
भूल गए हम अरमानों की पतंगे उड़ाना,
भूल गए हम खुद पे हँसना और हँसाना।
हमारे दिल अब लोहे से ज्यादा कड़े हो गए हैं,
शायद अब हम बड़े हो गए हैं।

कृति गुप्ता
उप प्रबंधक (मानव संसाधन)

कोल श्रमिक

कालिख लगी है चेहरे पर कहकर करते हैं बदनाम ।
बदनामी के दौर में तोहमत लगे तमाम ।।
तोहमत लगे तमाम साथ में आकर देखो ।
जो धरती का सीना चीरे उनको साथ बिठाकर देखो ।।
करे उजाला समस्त राष्ट्र में उनसे हाथ मिलाकर देखो ।
झुके हुए हैं कंधे उनके थोड़ा हाथ बंटाकर देखो ।।
फिर देखोगे समस्त राष्ट्र में उजियारे से गलियारे ।
थोड़ी सी हमदर्दी का उनको जाम पिलाकर देखो ।।
मिट्टी-मिट्टी, जर्रा-जर्रा उड़-उड़ कर ये कहता है ।
मजदूरों की मेहनत से ही राष्ट्र सफलता चुनता है ।।
चले कुदाली धरती पर तब देश आसमां छूता है ।
टक्कर-टक्कर तोड़े कोयला, कोल श्रमिक का बूता है ।।
जान छोड़ता, माल छोड़ता, ऊंचाइयों का ख्याल छोड़ता ।
खानों की गहराई में अक्सर ख़्वाबों का जंजाल छोड़ता ।।
गोद में खेलें अग्नि-पानी, कोल श्रमिक की यही कहानी ।
श्रमिकों सा विक्रांत नहीं है, प्रगति का सिद्धांत यही है ।।
विकसित भारत बने हमारा उसका तो आधार तुम्ही हो ।
चले-चलो तुम, बढ़े-चलो तुम समस्त राष्ट्र का सार तुम्ही हो ।।

केतन दीक्षित
सुरक्षा निरीक्षक,
सुरक्षा विभाग, ईसीएल

| कविता

खुद का दर्पण

मैं पापों से ओतप्रोत,
मन के भीतर जैसे लगी चोट,
आत्मा अशान्त है ग्लानि में,
खुद पर नियंत्रण मैं खोता हूँ,
फिर करनी देख मैं रोता हूँ,
दोष पूर्ण जीवन मेरा,
कर्मों का भार मैं ढोता हूँ,
जो मिल रहा वह कर्मों की ही तो छाया है,
जो किया मैंने उससे भिन्न कहा कुछ पाया है,
फिर अनायास क्यूँ रोता हूँ,
भाग्य के मढ़ मत्थे मैं दोष सारे,
क्यूँ अपने आप को खोता हूँ,
हाँ, नहीं है प्रारब्ध मेरा
कि ऐसे ही भटका जाऊंगा।
हाँ, अंधकार में हूँ,
कारण भी मैं हूँ,
पर रोशनी तो मैं ही लाऊँगा।
जो लाने हो सुख तो नियंत्रण रख,
गति तो रख पर दिशा में रख।
हाँ थोड़ा सब्र तो रख,
जो बिगड़ा है सुधारा जाएगा।

ऐसे थोड़े आता है सुख,
किस्मत थोड़ा तो रुलाएगी।
हाँ थोड़ा रो ले तु, इसमें कोई कमजोरी नहीं।
पर रोता रह, ऐसा कुछ जरूरी नहीं।
थोड़ा ही कर, पर प्रयास तो कर।
नियंत्रण का अभ्यास तो कर।
जैसा पढ़ा था बचपन में,
कि सील पर सरपट रस्सी निशान दे जाती है।
कर्मठ होना जीवन छाप दे जाता है।
मिट भी गया तो बाद में तेरे होने का प्रमाण दे जाता है।
तो देर लगेगी पर काम तो करना है।
व्यर्थ थोड़े ही जीवन है, कि यूँ ही जीना और मरना है।
हम आए ले के किसी का नाम तो क्या उसी में सीमित रह जाएंगे।
या लिख किस्मत के पन्नों में हम नाम अमर कहलाएंगे।
हाँ, लिख किस्मत के पन्नों में हम नाम अमर कहलाएंगे।

सुब्रत सदा
आर.टी.आई. प्रकोष्ठ,
ईसीएल मुख्यालय

| कविता

नया सवेरा नयी उम्मीद

नया सवेरा आया है, नयी उमंगे लाया है ।
सूरज की नई किरणें आईं, साथ नई उम्मीदें लाईं ।।

कल जो था सो बीत गया ।
निराशा, दर्द, सब छूट गया ।।

न दुख कर उसका जो निकल गया ।
न हो हताश अगर कुछ बिगड़ गया ।।

नई उमंगे, नई उम्मीदें जो आज आई हैं ।
जीवन में सफलता का, एक नया अवसर लाई है ।।

उठ नई उर्जा से, कुछ अच्छा करना है आज तुझे ।
अपने लक्ष्य की मंजिल तक बिना थके पहुंचना है तुझे ।।

पुराना सोचेगा तो, ये अवसर छूट जाएगा ।
उस पर दुखी होकर यूं ही, रोता रह जाएगा ।।

नया दिन जो आया है, नया उत्साह संग लाया है ।
सफलता की सौगातों में, जीवन ने अवसर पाया है ।।

आज अपने सामर्थ्य पर विश्वास करके देख ।
छोड़ पूरानी बातों को, एक नया प्रयास करके देख ।।

एक नई दिशा में आज चल ले ।
एक नई पहल तू आज कर ले ।।

बड़ा हौसला स्वयं का दिखा भरोसा खुद पर ।
लक्ष्य जो तेरे सामने है बस चलता जा उस पथ पर ।।

नया सवेरा आया है, नई उमंगे लाया है ।
सूरज की नई किरणें आईं, साथ नई उम्मीदें लाईं ।।

सुचित्रा तिवारी
पति - अक्षय कुमार तिवारी
वरिष्ठ प्रबंधक (खनन)
योजना व परियोजना विभाग, ईसीएल

नारी - देश का उज्जवल भविष्य

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपी गरियसी" अर्थात माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती हैं। प्राचीन काल से ही नारी को पूज्य माना जाता है। हिन्दू पुराणों के अनुसार जो कुछ भी शुभ है, सुंदर है, कल्याणकारी व मंगलकारी है उन सब की कल्पना केवल नारी रूप में ही की गई है। नारी शक्ति व साहस का प्रतीक हैं- देवी दुर्गा, लक्ष्मी, कालिका, महामाया व अन्नपूर्णा इस बात की ओर संकेत करती हैं कि नारी सर्वशक्तिमान होने के साथ शक्ति का केंद्र भी वही है। भगवान श्री राम के पहले माता सीता को व श्रीकृष्ण से पहले राधा जी का स्मरण करना इस बात को प्रमाणित करते हैं कि नारी की व्यापकता का महत्व असीम व अपरम्पार है।

आज समय बदल गया है। वर्तमान समय में नारी केवल घर के चूल्हे-चौके में सिमटी नारी नहीं रही, बल्कि अब नारी घर की चाहरदीवारी से निकल कर आसमान की बुलंदियों को छू रही हैं। पूरे परिवार को संभालने से लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, विज्ञान, खेल, सेना, अनुसंधान, कला, सिनेमा हर क्षेत्र में अपनी एक दमदार उपस्थिति दर्ज कर नारी को कमजोर कहने वाली ओछी मानसिकता को करारा जबाब दे रही है। मध्यकाल में नारी को शिक्षा से वंचित रखा गया, परन्तु कालांतर में नारी शिक्षा के क्षेत्र मे सावित्री बाई फुले का योगदान अमूल्य है। उनके प्रयास नारी शिक्षा के क्षेत्र में एक युग परिवर्तन करने वाला क्रांतिकारी कदम था। उन्होंने बालिका शिक्षा की नींव रखी जिसको आधार बनाकर नारी शिक्षित, सम्मानित और सशक्त बनी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सरोजिनी नायडू, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, रानी चेनम्मा ने अदम्य साहस का परिचय दिया। वहीं दूसरी ओर सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी वीर रस की विदुषियों ने अपनी लेखनी से वीरों के उत्साह को दोगुना किया। अगर विज्ञान, तकनीकी, रक्षा, वनस्पति आदि क्षेत्रों में नारी के योगदान को देखा जाए तो कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, टेसी थॉमस (मिसाइल वुमन), डॉ. जानकी अम्माल (वनस्पति वैज्ञानिक), और अन्ना मणी (मौसम विज्ञानी) शामिल हैं, जिन्होंने भारत का नाम पूरे विश्व में रौशन किया। किरण बेदी जिन्होंने यह साबित कर दिया कि महिला किसी भी क्षेत्र मे बदलाव ला सकती हैं। खेल जगत में भी पी. वी. सिंधु, मिताली राज, झूलन गोस्वामी, कोनेरू हम्पी, शीतल देवी, अवनी लेखरा जैसी खिलाड़ियों ने अपने सपनों को पंख दिया और उन सपनों को जिया। अरुणिमा सिन्हा जिन्होंने ट्रेन दुर्घटना में अपने पाँव गँवा दिए लेकिन एक अदम्य साहस के साथ हिमालय की चोटियों पर फतह हासिल की।

''नारी अस्य समाजस्य कुशलवास्तुकारा अस्ति'' अर्थात महिलायें समाज व राष्ट्र की आदर्श शिल्पकार होती हैं। वे समाज का आधार स्तम्भ हैं। एक ओर वो माँ बनकर संस्कार व ममता बांटती हैं तो दूसरी ओर शिक्षिका बनकर ज्ञान का प्रसार करती हैं। पहले जो महिलाएं घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित थी, आज वे स्वरोजगार के माध्यम से न केवल आमदनी कर रही हैं बल्कि

परिवार की आर्थिक स्थिति को भी मजबूत कर रही हैं। वे समाज के अन्य वर्गों के साथ कदम से कदम मिला कर एक प्रगतिशील राष्ट्र की नींव रच रही हैं।

समाज के हर क्षेत्र मे नारी का योगदान अतुलनीय हैं। भले ही यह समाज पुरुष प्रधान रहा हो किन्तु नारी अपने त्याग, समर्पण, सहनशीलता, सत्य और निष्ठा का आँचल पकड़ कर, अन्याय के विरुद्ध खड़ी होकर, कर्तव्य व प्रेम के पथ पर समाज का पथ प्रदर्शन कर रही हैं चाहे वो पथ प्रगतिशील हो या फिर संघर्ष व कंटिमय ही क्यों न हो। जैसे श्री गौरी सावंत एवं नसीमा खातून किसी परिचय का मोहताज नहीं हैं। अपने संघर्ष व सोच से उन्होंने न केवल समाज की मानसिकता बदली है बल्कि रेड लाइट एरिया में कार्य करने वाली महिलाओं व उनके बच्चों को भी एक सम्मानित व शिक्षित जीवन जीने का रास्ता सिखाया। साथ ही, इन महिलाओं को संवैधानिक अधिकार दिलाने और समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का पहल कर रही हैं। इन्हीं सब सामाजिक कार्यों के फलस्वरूप 2023 में नसीमा खातून को राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का सलाहकार नियुक्त किया गया।

नारी सृष्टि की वो रचना है जिसको अगर आत्मविश्वास, साहस व शक्ति से सींचा जाए तो यह हर क्षेत्र मे चमत्कार कर सकती है। इंदिरा गांधी व प्रतिभा पाटील ने दुनिया को दिखा दिया कि महिलायें राजनीति मे केवल समर्थ ही नहीं बल्कि नेतृत्व करने का एक विशिष्ट सामर्थ्य रखती हैं। वर्तमान समय में हमारे देश की प्रथम नागरिक भी एक महिला ही हैं, जो पूरे देश का संचालन बखूबी निभा रही हैं और यह वो चित्र है जो हमें गौरवान्वित करता है।

परंतु इसके विपरीत समाज में नारी का एक दूसरा चित्र भी दृष्टिगोचर होता है। जहाँ महिलायें न जन्म से पूर्व सुरक्षित होती हैं और न ही जन्म के बाद। उनका जीवन आज भी चुनौतियों से भरा है, आज भी उन्हें दबाकर रखा जाता हैं। उनके साथ हिंसा व भेदभाव तो होता ही है, उन्हें उनके अधिकारों से भी वंचित रखा जाता है जो कि बहुत ही दुख की बात है।

नारी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए संविधान में अनेक प्रावधान बनाए गए हैं पर आज भी महिलाएं पूर्ण रूप से सुरक्षित नहीं बन पाई हैं। इसका मुख्य कारण हैं कि न तो यह पुरुष प्रधान समाज उन्हें उनके अधिकारों को पूर्ण रूप से इस्तेमाल करने की अनुमति देता हैं और न ही महिलाएं अपने अधिकार के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक हैं।

नारी सशक्तिकरण व नारी का सम्मान से अभिप्राय महिलाओं की उस योग्यता से है जिससे वे अपने जीवन से जुड़े सभी अधिकार स्वयं ले सके। उनको वो शक्ति, अवसर और अधिकार देना जो उन्हे समाज में स्वतंत्र और सम्मानित स्थान दिला सके। वो अपने सपनों और विचारों को खुलकर अभिव्यक्त कर सके।

एक उन्नत प्रगतिशील राष्ट्र की रचना तब तक संभव नही है जब तक समाज अपनी सोच नही बदलेगी। क्योंकि महिला अपने साथ पूरे परिवार, अपने पूरे समाज व पूरे देश को सशक्त करती हैं। उनकी सहभागिता के बिना राष्ट्र का विकास संभव नही हैं। कहा भी गया है :-

''माता निर्माता भवति''

रुपा मित्रा
राजभाषा विभाग, ईसीएल

शब्द संस्कार

शब्दों की यात्रा में आगे बढ़ते हुए एक मूल शब्द से उत्पन्न कुछ शब्द या समरूप ध्वनियों वाले शब्दों से परिचित होते है :-

चिकित्सक – Doctor
चिकित्सा – Treatment
चिकित्सात्मक – Therapeutic
चिकित्सार्थ अवकाश – Medical leave
चिकित्सालय – Hospital, Clinic
चिकित्सीय साधन – Medical appliances

तर्क – Logic
तर्कबुद्धि – Rationalism
तर्कमूलक, तर्कसंगत – Rational
तर्कयुक्त – Argumentative
तर्क-वितर्क – Argumentation
तर्कशास्त्री – Logician

तथ्य – Fact
तथ्यता – De Facto
तथ्यात्मक – Factual
तथ्यानुबंधन – Colligation of facts
तथ्यान्वेषण – Fact finding
तथ्यान्वेषी – Fact-finding

चिरकालीन – Lasting, Perpetual
चिरपरिचित – Known since long
चिरप्रतीक्षित – Long awaited
चिरस्थीय – Everlasting, Perpetual
चिरस्मरणीय – Monumental

कथन – Statement
कथनानुसार – As per one's statement
कथा – Narrative, Fiction
कथानक – Storyline, Plot
कथित – Said, Stated
कथोपकथन – Dialogue

तात्कालिक – Extempore, Instantaneous, Immediate
तात्क्षणिक – Instantaneous
तात्विक – Intrinsic, Essential
तात्पर्य – Purport
तात्पर्यित – Purported

गवाह – Witness
गवाही – Evidence
गवेषक – Researcher
गवेषणा – Research

मिथुन साव
राजभाषा विभाग, ईसीएल

निदेशक (मानव संसाधन) की मंगलकारी उपस्थिति में राजभाषा (हिंदी) माह का शुभारंभ

जन-जन की भाषा हिंदी एवं संघ की राजकाज की भाषा हिंदी के लिए दशकों से सितंबर माह का बहुत विशिष्ट स्थान रहा है। इस माह को पूरे राष्ट्र के साथ-साथ पूरा ईसीएल परिवार उल्लास, उमंग एवं उत्साह के साथ राजभाषा (हिंदी) माह के रूप में प्रति वर्ष मनाता आ रहा है। गत वर्ष की समरूपता के साथ इस वर्ष भी राजभाषा (हिंदी) के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए ईसीएल मुख्यालय सहित समस्त खनन क्षेत्रों में नानाविध कार्यक्रमों को संपन्न किया गया।

तिथि 02.09.2025, दिवस मंगलवार को ईसीएल के मानव संसाधन विभाग के सभा कक्ष में राजभाषा (हिंदी) माह, 2025 का शुभारंभ कार्यक्रम के साथ-साथ बांग्ला-हिंदी काव्य पाठ एवं हिंदी टंकण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में निदेशक (मानव संसाधन) श्री गुंजन कुमार सिन्हा जी की मंगलकारी उपस्थिति रही।

सभा को संबोधित करते हुए निदेशक महोदय ने कहा कि बड़े संस्थानों में या शिक्षा के लिए विदेश जाने पर पहले वहाँ की भाषा सीखनी पड़ती है। लेकिन हमारे देश में पहले अंग्रेजी सीखनी पड़ती है। इसको अधिक महत्व दिया जाता है। अंग्रेजी पढ़ने या जानने वाले ज्यादा जानकार है, ऐसी लोगों की सोच है। लेकिन ऐसी बात बिल्कुल नहीं है। हमें अंग्रेजीयत से मुक्त होना है। इस संकीर्ण मानसिकता से अपने आप को मुक्त करना है। अपनी भाषा, अपनी मातृभाषा को हमेशा महत्व देना चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए। राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह में राजभाषा माह मनाने की परंपरा रही है। यह बहुत सराहनीय कार्य है और लोगों को ज्यादा से ज्यादा हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। इतना करना चाहिए कि राजभाषा माह मनाने की जरूरत ही न पड़े।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में, भारत सरकार के हिंदी शिक्षण योजना के तहत पाँच महीनों तक चलने वाली प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत पाठ्यक्रमों की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले कर्मियों को माननीय निदेशक (मानव संसाधन) द्वारा गृह मंत्रालय द्वारा निर्गत प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इसके पश्चात बांग्ला-हिंदी काव्य पाठ का शुभारंभ हुआ जिसमें ईसीएल कर्मियों की सक्रिय सहभागिता रही।

काव्य पाठ या कविता पाठ एक मनमोहक कार्यक्रम होता है। कविता क्या है? सूक्ष्म तौर पर अगर देखा जाए तो कविता एक आंतरिक भाव है और यही भाव जब शब्दों का रूप ग्रहण कर लेती हैं तब कविता की रचना होती है। कविता कल्पना, भाव, अनुभव और शिल्प का ऐसा समायोजन है जो मन को छू ले और सुन्दरता का अनुभव कराए। बांग्ला-हिंदी काव्य पाठ में हिंदी काव्य पाठ के समीक्षक के रूप में श्री अजय राय, वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त) तथा बांग्ला काव्य पाठ के समीक्षक के रूप में वरिष्ठ बांग्ला कवि एवं पूर्व ईसीएल कर्मी श्री वैद्यनाथ कर्मकार जी की गरीमामयी उपस्थिति रही।

राजभाषा (हिंदी) माह को सफल बनाने के लिए आगे आई शताक्षी महिला मंडल की टीम

राजभाषा (हिंदी) माह, 2025 के अंतर्गत ईसीएल के सतग्राम-श्रीपुर क्षेत्र के सौजन्य से समीपवर्ती विद्यालयों में आयोजित नानाविध प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने हेतु दिनांक 16.09.2025 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में शताक्षी महिला मंडल की क्षेत्रीय शाखा अध्यक्षा श्रीमती अरूणा थौनाउजा सादर आमंत्रित रहीं।

आयोजित प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों द्वारा उत्साहपूर्वक भाग लिया गया जिसमें उन्होंने अपनी-अपनी प्रतिभा का ईमानदारीपूर्वक प्रदर्शन किया। सफल प्रतिभागियों को शाखा अध्यक्षा श्रीमती थौनाउजा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

इस समारोह में, क्षेत्रीय शताक्षी महिला मंडल की सदस्या, विद्यालयों के अध्यापकों की गरिमामयी उपस्थिति रहीं। यह आयोजन न केवल हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था, बल्कि समाज में महिलाओं की सहभागिता और नेतृत्व को भी उजागर करता है।

संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण

माननीय श्री भर्तृहरि महताब, संसद सदस्य (लोकसभा) की अध्यक्षता में दिनांक 22.12.2025 को आईटीसी रॉयल, कोलकाता में संसदीय राजभाषा समिति के 10 संसद सदस्यों द्वारा ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ईसीएल) का निरीक्षण किया गया जिसमें ईसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री सतीश झा की गरिमामयी उपस्थित रही। सानिध्य में, कोयला मंत्रालय के आर्थिक सलाहकार श्री माणिक चंद पंडित एवं संयुक्त सचिव (राजभाषा) श्रीमती आस्था जैन की गुरुत्वपूर्ण उपस्थित रहीं।

ईसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक द्वारा माननीय संसदीय सदस्यों को कंपनी में और अपने कमान क्षेत्र में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन तथा गतिविधियों से अवगत कराया गया। माननीय संसदीय समिति सदस्यों द्वारा ईसीएल में हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन की सराहना करते हुए कंपनी को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

माननीय संसदीय समिति में ईसीएल की पूर्व स्वतंत्र निदेशक श्रीमती धर्मशीला गुप्ता की सादर उपस्थित रहीं। महोदया द्वारा ईसीएल में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का समर्थन करते हुए विविध गतिविधियों से अन्य माननीय सदस्यों को अवगत कराया।

इस उपलक्ष्य पर ईसीएल की ओर से लगायी गई राजभाषा प्रदर्शनी का माननीय संसदीय समिति द्वारा निरीक्षण किया गया जिसमें माननीय सदस्यों द्वारा क्षेत्रीय भाषा बांग्ला में प्रकाशित पत्रिका 'मृदंगार' तथा हिंदी में प्रकाशित पत्रिका 'ज्योत्स्ना' की प्रशंसा की गईं।

महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री मदन मोहन कुमार तथा कंपनी सचिव श्री रामबाबू पाठक के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में तथा प्रबंधक (मानव संसाधन) श्री तुहीन सुब्राशील, उप प्रबंधक (वित्त) श्री देबाशीष घोष एवं वरिष्ठ निजी सहायक श्री इंद्रनील चट्टराज के सहयोग से संसदीय राजभाषा समिति सदस्यों का निरीक्षण सुचारू रूप से संपन्न हुआ।

संसदीय राजभाषा समिति ने ईसीएल का किया निरीक्षण

सीएमडी ईसीएल : हिंदी गर्व व सम्मान की भाषा

राजभाषा (हिंदी) माह, 2025 के अंतर्गत हिंदी दिवस का आयोजन दिनांक 15.09.2025 को ईसीएल के मुख्यालय स्थित "संकल्प" सम्मेलन कक्ष में पूरे उत्साह और गरिमा के साथ किया गया। ईसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री सतीश झा की अध्यक्षता एवं निदेशक (तकनीकी) संचालन श्री नीलाद्रि रॉय की गरिमामयी उपस्थिति में समारोह संपन्न हुआ जिसमें मुख्यालय के विभागीय प्रधानों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता रही।

समारोह की शुरूआत कोल इंडिया गीत "हम है कोल इंडिया ....." के गायन से हुई, जिससे पूरे सभागार में जोश और उत्साह की भावना का संचार हुआ। इसके पश्चात भारत सरकार के माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह, माननीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी किशन रेड्डी, माननीय कोयला एवं खान राज्य मंत्री श्री सतीश चन्द्र दुबे और कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष श्री पी. एम. प्रसाद द्वारा हिंदी भाषा को लेकर जारी हिंदी दिवस संदेशों का ईसीएल कर्मियों द्वारा वाचन किया गया, जिसमें हिंदी के प्रचार-प्रसार और सरकारी कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया गया है। साथ में, भारत सरकार के हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत पाठ्यक्रम में से पारंगत व प्राज्ञ पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण ईसीएल कर्मियों को सम्मानित अतिथियों द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभागार को संबोधित करते हुए आदरणीय अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक ने कहा कि हमें हिंदी को गर्व और सम्मान के साथ अपनाना चाहिए, क्योंकि हिंदी हमारी अस्मिता और पहचान की भाषा है। अपने संबोधन को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी अपने समावेशी स्वभाव के कारण वैश्विक स्तर पर भी लोकप्रिय हो रही है। उन्होंने हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने की बात भी अपने संबोधन में कही। मुख्य अतिथि निदेशक (तकनीकी) ने कहा कि ईसीएल मुख्यालय "ग" क्षेत्र में आने के बावजूद भी हिंदी के प्रचार-प्रसार को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर कई बार सम्मानित हो चुकी है। ईसीएल में राजभाषा (हिंदी) के प्रचार-प्रसार का कार्य निरंतर जारी रहता है। हम राजभाषा प्रतिज्ञा के प्रति प्रतिबद्ध हैं और उसके संवर्धन हेतु निष्ठापूर्वक प्रयत्नशील भी हैं।

समारोह में स्वागत भाषण विभागीय प्रधान (प्रशासन) श्री आबीर मुखोपाध्याय द्वारा दिया गया, वहीं धन्यवाद ज्ञापन श्री ए के तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक तथा मंच संचालन राजभाषा कर्मी सुश्री सुमेधा भारती द्वारा किया गया।

बाल मन में सीखने की भावना का बीजारोपण

बाल मन में सृजनात्मकता और सीखने की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए ईसीएल द्वारा राजभाषा (हिंदी) माह, 2025 के अंतर्गत दिनांक 03.09.2025 को डिसेरगढ़ में अवस्थित संत जूड प्राइमरी स्कूल, दिनांक 13.09.2025 को नीमजोड़ा प्राथमिक विद्यालय तथा दिनांक 16.09.2025 को उपेंद्र नाथ विद्यालय में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें नर्सरी से चतुर्थ वर्ग तक के बच्चों ने भाग लिया। बाल मन की अभिव्यक्ति के लिए चित्रकारी एक सार्थक माध्यम है, इससे उनकी सरल भावनाएं, कल्पनाएँ, मनोविज्ञान एवं सोचने के तरीके में विकास होता है जिससे राष्ट्र के समुन्नत भविष्य का निर्माण होता है।

दिनांक 10.09.2025 को सोदपुर कोलियरी उच्च विद्यालय में हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें पंचम से दशम वर्ग तक के 97 बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया था। प्रथम श्रेणी में वर्ग 5 एवं 6, द्वितीय श्रेणी में वर्ग 7 एवं 8 तथा तृतीय श्रेणी में वर्ग 9 एवं 10 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया जिनके निबंध लेखन का विषय प्रथम श्रेणी के लिए "मेरा घर मेरा परिवार, जल का महत्व, मेरे प्यारे शिक्षक"; द्वितीय श्रेणी के लिए "अनुशासन, खेल का महत्त्व एवं मातृभाषा" तथा तृतीय श्रेणी के लिए "स्वच्छता और स्वास्थ्य, शिक्षा और संस्कृति, नैतिक मूल्यों की महत्ता" थी। प्रतिभागियों को तीन में से एक विषय पर निबंध लेखन करना था।

दिनांक 12.09.2025 को पुरूलिया जिले के परबेलिया कोलियरी उच्च विद्यालय में हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। तीन श्रेणियों में विभक्त इस प्रतियोगिता में पाँचवीं से दसवीं तक के 87 विद्यार्थियों ने भाग लिया। साथ ही, 23.09.2025 को ए.सी. इंस्टीच्यूट में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निदेशक (मानव संसाधन) श्री गुंजन कुमार सिन्हा का मानना है कि चित्रकला, निबंध लेखन एवं भाषण से मनुष्य में मुख्य रूप से बौद्धिक और भावनात्मक गुणों यथा सोचने की क्षमता, जागरूकता, आत्म-संयम, विषय-बोध, जिज्ञासा, और भाषा की समझ का विकास होता है जिससे व्यक्ति को व्यवस्थित रूप से विचार करने, अपनी भावनाओं को व्यक्त करने और अपने विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में सहायता मिलती है, फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व और संचार कौशल में सुधार होता है।

संत जूड़ प्राइमरी स्कूल

सोदपुर कोलियरी उच्च विद्यालय

पारबेलिया कोलियरी हिन्दी उच्च विद्यालय

उपेन्द्रनाथ प्राथमिक विद्यालय

नीमजोड़ा प्राथमिक विद्यालय

काम-धाम

जल-विहार

धमाचौकड़ी

सुबह सवेरे नदी तीरे

सप्तजीत बनर्जी
कक्षा - III
संत विंसेंट हाई एण्ड टेक स्कूल, आसनसोल
माता - पूजा महाराज, पीआरबी प्रकोष्ठ

दोस्ती

पढ़ता हूं रोज ही तुम्हें, तह तक जानने की कोशिश करता हूं
समझना चाहता हूं तुम्हें, इसलिए हर पल सोचता रहता हूं
दूरियां बहुत है तेरे मेरे बीच, मिलना संभव तो नहीं
पर, सींचता हूं इस रिश्ते को यादों के फव्वारे से।
हां माना, रिश्ते बहुत से हैं दुनिया में जाने अनजाने,
पर, सबका साथ निभाने की कोशिश करता हूं।
यह दोस्ती का रिश्ता है, बुना है जिसे दिल के धागों से
जिसमें सादगी है, प्रेम है, सम्मान है और जज़्बात भी।

तुम मुस्कुराती हो जब भी, तो मैं महसूस करता हूं
जब भी परेशान होती हो! तो मैं बेचैन रहता हूं।
करता हूं कभी-कभी तुम्हें भूलने की नाकाम कोशिशें,
पर मेरा निश्छल प्रेम झलक जाता है मेरी आंखों में
और पढ़ लेती हो शायद इन अनकही अरमानों को,
तभी तो आंखों से सहज प्रेम उमड़ पड़ता है।
तुम जहां भी रहो खुश रहो, मुस्कुराती रहो हर पल
बस इस दोस्ती के रिश्ते को कमज़ोर मत होने देना।

प्रदीप कुमार
मुख्य भेषजज्ञ,
एस.पी. माइन्स क्षेत्र, ईसीएल

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का आह्वान

वन्दे मातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम् । वन्दे मातरम् ।।1।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम् । वन्दे मातरम् ।।2।।

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम् ,
रिपुदलवारिणीं मातरम् । वन्दे मातरम् ।।3।।

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणा: शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम् ।।4।।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम् । वन्दे मातरम् ।।5।।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम् । वन्दे मातरम् ।।6।।

राष्ट्रीय गीत के गौरवशाली 150 वर्ष

RIDGE